RNI No. : UPHIN/2017/74695

डाक पंजीकरण सं. :
एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी. - 558/2018-2020

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 4 अंक : 02 | लखनऊ, बृहस्पतिवार, 6 अगस्त 2020 से 5 सितम्बर 2020 | पृष्ठ : 12 | मूल्य : 10 रूपये

तिमाही फोटो प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ और सराहनीय

सर्वश्रेष्ठ

संजय दास
धनबाद (झारखण्ड)

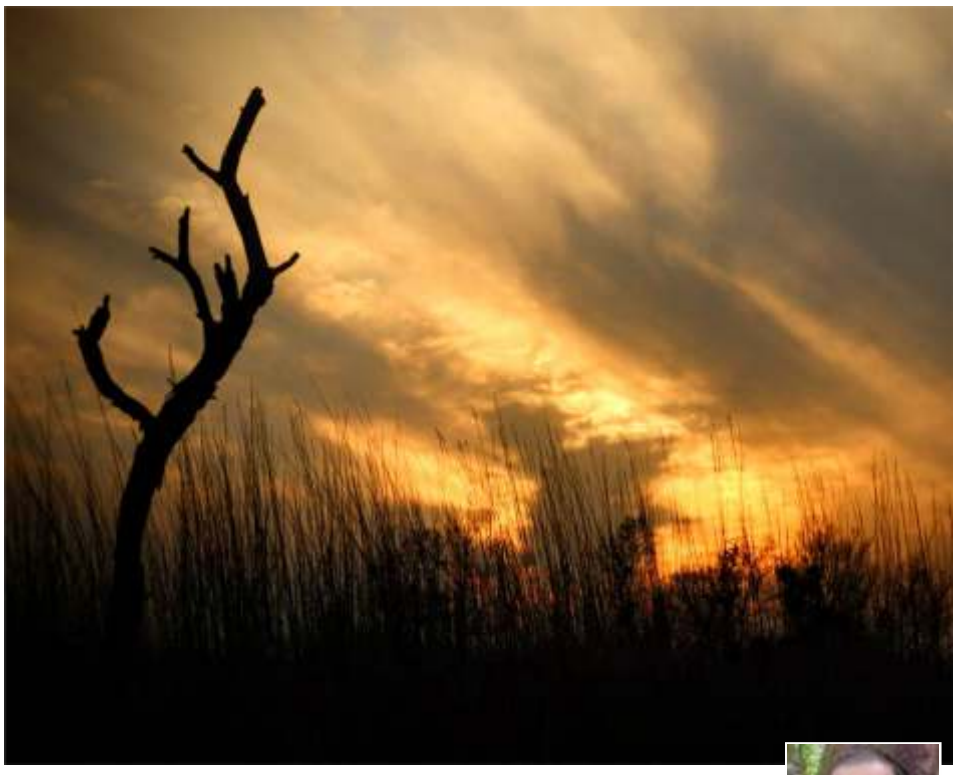

सांत्वना (प्रथम)

गुंजन वसन्त
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

सराहनीय

प्रणव दास
दार्जलिंग (वेस्ट बंगाल)

सांत्वना (द्वितीय)

अजय कुमार
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

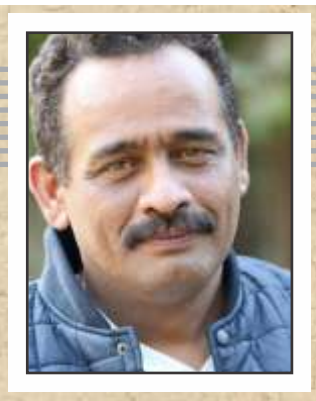

सम्पादक की कलम से ...

मेरे फोटोग्राफर साथियो,

साथियो स्टूडियो न्यूज के अगस्त 2020 अंक के साथ हम आपके समक्ष है। साथियो आप लोगो के सहयोग और सुझाव के साथ हम स्टूडियो न्यूज के चौथे वर्ष में प्रवेश कर रहे है। इन तीन वर्षो में हमने बहुत कठिन परिश्रम किया जिससे हम अपने पाठको को अधिक से अधिक फोटोग्राफी से सम्बंधित जानकारी उपलब्ध करा सके। रास्ता आसान नहीं है परन्तु आसान रास्तो पर चलना हमने नहीं सीखा खास कर जब बात संगठित हो कर कुछ करने की हो।

लॉकडाउन के समय भी स्टूडियो न्यूज आपके लिए पूरी मुस्तैदी से कार्य करता रहा। सिमित साधन होने के बावजूद हमने अभी तक हिम्मत नहीं हारी इसके लिए हम अपने शुभचिंतकों एवं पाठको का धन्यवाद् देते हैं। कुछ लोगो के लिए आज की स्थिति आसान हो सकती है लेकिन अभी भी बहुतो के लिए आज की स्थिति अविश्वसनीय रूप से कठिन है। साथियो ये कष्ट का समय भी जल्दी बीत जायेगा ये हमें उम्मीद है। धीरे-धीरे लोगों ने सरकार द्वारा दी गयी गाइड लाइन को अपनाते हुए कार्य करना शुरू कर दिया है, मार्केट में भी कुछ चहल-पहल शुरू हो रही है जिससे एक आस जगी है। उम्मीद ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि ये साल जाते-जाते हम लोग फिर से अपनी पुरानी दिनचर्या पर आ जायेंगे।

साथियो कष्ट के समय और जरूरी हो जाता है कि हम सब एकजुट हो कर इसका मुकाबला करे, कंपनियों को भी चाहिए की इस मुसीबत की घड़ी में फोटोग्राफर साथियो की हर संभव मदद करें। ये समय सब के लिए दुखदायी है और सब एक दूसरे के पूरक हैं। इस महामारी ने सब को एक मंच पर खड़ा कर दिया है, जहाँ से सभी को नयी शुरूआत करनी है। साथियो इस महामारी ने हमें ये अहसास करा दिया है कि हमें अपने व्यापार को करने के तरीके को नए ढंग से सोचना पड़ेगा क्योकि पिछले 4-5 वर्षो में ज्यादातर साथियो ने तकनीक के नाम पर जितना कमाया था वो सब लगा दिया और जब कमाने का समय आया तब इस महामारी ने घेर लिया। इसी वजह से ज्यादातर साथियो की दशा दयनीय हो गयी। साथियो अंधी दौड़ में भागने से बचे, आपको जो चाहिए वह ही खरीदे, लोगो की देखा-देखी करके न खरीदें। ये आप तभी कर पाएंगे जब आप तकनीकी रूप से मजबूत होंगे।

संगठित होकर काम कीजिये एवं अपने व्यापार को सुदृढ़ बनाये। आप सभी अपना एवं अपने परिवार तथा मित्रो का ख्याल रखिये। साथियो मिलजुल कर इस मुश्किल समय का सामना कीजिये। शेष अगले अंक में।

सुरेंदर सिंह बिष्ट
सम्पादक

शोक समाचार

फोटोग्राफर्स एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के कानपुर मण्डल अध्यक्ष एवं कन्नौज जिलाध्यक्ष **आलोक शुक्ला** जी का निधन दिनांक 8 जुलाई 2020 को हो गया था। कन्नौज फोटोग्राफर्स एसोसिएशन के पदाधिकारियों द्वारा उनके स्टूडियो पर एक शोक सभा का आयोजन किया गया। शोक सभा में आलोक शुक्ला को श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं दो मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा को शान्ति एवं शोकाकुल परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना ईश्वर से की गयी। इस मौके पर अरशद खाँ, मिलन कटियार, गुलजार हामिद सीमू, पिन्टू सक्सेना, पवन राठौर, अवधेश राठौर, आशुतोष श्रीवास्तव, पिन्टू सैनी, विनय ठाकुर, रामजीत प्रजापति, नसीम, आमिर खां, रामू, सूरज, ब्रजेश कुमार, शिवम सैनी, नितिन वर्मा, सम्स, महेन्द्र कुमार सहित पदाधिकारी मौजूद रहे।

सीतापुर फोटोग्राफर एसोसिएशन' की ओर से दिवंगत फोटोग्राफर भाई **आलोक शुक्ला** को विनम्र श्रद्धांजलि देते पदाधिकारी

अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय खबरें

प्रोफोटो ने आइफोन कैमरा कम्पैटिबिलिटी के लिए बी10 सीरीज़ के फ्लैश अपडेट किया

प्रोफोटो बी10 ऐसा पहला स्टूडियो फ्लैश सिस्टम है जो कि आइफोन कैमरा से शूटिंग के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

नया एच-266/वीवीसी वीडियो कम्प्रेशन स्टैंडर्ड वीडियो साइज को 50 फीसद तक कम कर सकता है

नया कम्प्रेशन स्टैंडर्ड वीडियो फाइल साइज को आधा करने के लिए तैयार है ताकि स्पेस आधा हो जाए व ट्रांसमिशन की रफ्तार बढ़ जाए, इससे पोर्टेबल 8K फुटेज के लिए रास्ते भी निकल आएंगे।

कैनन पहली बार लाया इमेजप्रोग्राफ प्रो 303 13" इंकजेट प्रिंटर

कैनन ने नए छोटे फुटप्रिंट इंकजेट फोटो प्रिंटर इमेजप्रोग्राफ प्रो-300 का एलान किया है। यह 13 × 19" तक प्रिंट उत्पन्न करता है और इसकी गति लगभग 4मिनट और 15सेकेंड है।

कैनन का आरएफ 85एमएम एफ2 मैक्रो आइएस एसटीएम क्लोज अप और पोर्ट्रेट के लिए सही है

कैनन का आरएफ 85एमएम एफ2 मैक्रो आइएस एसटीएम एक कम दाम का टेलीफोटो प्राइम लेंस है। इसमें मात्र 0.35 एम (14") फोकल डिस्टेंस व 0.5× मैग्निफिकेशन है। जब इसे नए R5 और R6 के साथ जोड़ा जाए, तो यह आठ चरणों में कैमरे के हिलने से पड़ने वाले फर्क को मिटाता है।

कैनन ने रिलीज किया EOS R5 45MP सेंसर के साथ, 8के वीडियो कैप्चर और नेक्स्ट जेन डुअल पिक्सल एएफ

लंबे समय से रूके हुए EOS R5 को कैनन ने औपचारिक रूप से रिलीज कर दिया। यह कंपनी का फुल फ्रेम मिररलेस कैमरा है। इसकी खासियतों में शामिल है 45MP सीएमओएस सेंसर, डुअल पिक्सल AF II

सिस्टम, 8K वीडियो कैप्चर व 20fps बर्स्ट, यह एक आरएफ माउंट कैमरा है जिसका हम सब बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।

अब आप अपने कम्पैटिबल फूजीफिल्म कैमरे को मैकओएस में बतौर वेबकैम इस्तेमाल कर सकते हैं

अब आप कम्पैटिबल फूजीफिल्म कैमरा से अपने मैकओएस हार्डवेयर पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल कर सकते हैं बिना किसी डेडिकेटेड कैप्चर कार्ड के।

थंडरबोल्ट 4: थंडरबोल्ट 3 के जैसी ही स्पीड, व अधिक फंक्शनल

थंडरबोल्ट 4 40जीबी/प्रति सेकेंड पर ही है, इसकी न्यूनतम जरूरत में शामिल है 4K मॉनिटर सपोर्ट, तेज एक्सटर्नल ड्राइव स्पीड व अधिक।

भारतीय फोटोग्राफर ने अपने घर को कैमरा में बदलकर अपने बेटों का नाम कैमरा की कंपनी पर रखा

भारतीय फोटोग्राफर रवि हॉन्गल इस दुनिया में संभवतः सबसे अधिक फोटोग्राफी के शौकीन हैं। करीब 1,00,000 डॉलर खर्च करने के बाद अपने घर को कैमरे में तब्दील कर अपने बेटों का नाम कैनन, निकॉन व इप्सन रखा।

शोधकर्ताओं ने बीटल में जोड़ने के लिए छोटे वायरलेस कैमरे बनाए

शोधकर्ताओं ने छोटे व वायरलेस कैमरे बनाए जिन्हें बीटल में जोड़ा जा सके। इनके माध्यम से यह पता लगाया जा सकेगा कि कीड़े किस प्रकार अपनी दुनिया में रहते हैं।

निकॉन Z5 एक एंट्री लेवल फुल फ्रेम कैमरा

निकॉन ने Z5 ने एलान किया है, एक एंट्री लेवल फुल फ्रेम कैमरा जो कि Z माउंट का इस्तेमाल करता है। Z5 काफी हद तक Z6 से मिलता है, दोनों में इनबॉडी इमेज स्टैबलाइजर, ऑटोफोकस सिस्टम व कई डिजाइन एक जैसे हैं। Z5 में है 24 MP एफ एक्स फॉर्मेट सीएमओएस सेंसर, Z6 में प्रयोग किया जाने वाले बीएसआइ वैरिएंट नहीं बल्कि एक्सपीड 6 प्रोसेसर। Z5 में है इन बॉडी इमेज स्टैबलाइजेशन जो कि कैमरे के हिलने को पांच स्टॉप तक कम करता है।

पैनासॉनिक ल्यूमिक्स DC S1H उपलब्ध

पैनासॉनिक ने अपना वादा पूरा किया। वह फर्मवेयर अपडेट रिलीज कर दिया जो एस1एच पर रॉ वीडियो आउटपुट जोड़ता है। इस अपडेट से कैमरा 5.9K/29.97p व सुपर 35 फॉर्मेट 4के/59.94p रॉ वीडियो से ऑटोमॉस निंजा वी रिकॉर्डर पर आउटपुट देता है।

सोनी का नया ए7एस III लाया है 4K/120p वीडियो कैप्चर, एक्सटेंडेड शूटिंग व बेहतर एएफ के साथ

सोनी ने ए7एस III का एलान किया है, जो कि एक थर्ड जेनरेशन वीडियो फोकस कैमरा है। 12MP सेंसर के अलावा यह तेज प्रोसेसिंग, बेहतर ऑटोफोकस, 4K/120p वीडियो कैप्चर और सबसे तेज रिज्यॉल्यूशन ईवीएफ देता है।

फूजीफिल्म ने नए EF-60 स्पीडलाइट, EF-W1 वायरलेस ट्रिगर एक्स के लिए, GFX सिस्टम कैमरे का एलान किया है

EF-60 स्पीडलाइट एक रेडियो कंट्रोल फ्लैश है जो कि नए EF-W1 वायरलेस कमांडर के साथ पेयर होकर फूजीफिल्म एक्स सीरीज व जीएफएक्स सिस्टम कैमरे के लिए देता है वायरलेस फ्लैश ऑप्शन्स।

सोनी ने दुनिया का पहला सीएफ एक्सप्रेस टाइप ए कार्ड व कार्डरीडर का एलान किया है

नया सीएफ एक्सप्रेस टाइप ए कार्ड 800एमबी/प्रति सेकेंड व 700एमबी/प्रति सेकेंड पर देता है रीड व राइट की सुविधा व इसकी क्षमता 80 जीबी और 160 जीबी है।

•

स्टूडियो न्यूज

वर्ष : 4 अंक : 02 | लखनऊ, बृहस्पतिवार, 6 अगस्त 2020 से 5 सितम्बर 2020 | पृष्ठ : 12 | मूल्य : 10 रूपये

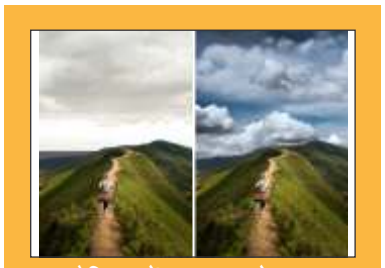

मैजिक वेंड टूल - पेज 4

महान विभूतियाँ - पेज 6-7

कोविड-19 में फोटोग्राफी - पेज 8-9

SAVE THE DATE - पेज 10

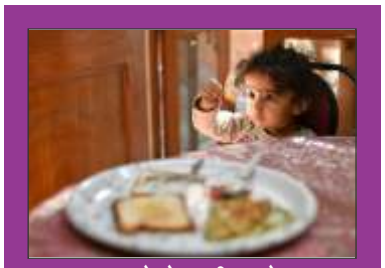

चाइल्ड फोटोग्राफी - पेज 12

सिनेमा/सिनेमेटोग्राफी

डॉ0 आत्मप्रकाश सिंह, वाराणसी

चारों ओर अंधेरा होता है, पीछे की दीवाल से तेज रोशनी सफेद पर्दे पर पड़ती है और आप कुछ समय के लिए पर्दे पर चल रहे दृश्यों में खो जाते हैं। पर्दे पर चल रही कहानी आपको ये अहसास कराती है कि सबकुछ आपके आसपास हो रहा है। दर्शकों के रूप में आपको पता होता है कि ये तो बस चलचित्र (फ़िल्म) है, किंतु फिर भी आप उसके विषय से बंधे चले जाते हैं। इसी सम्मोहन को ही सिनेमा कहते हैं। सिनेमा एक ऐसे काल्पनिक दुनिया में ले जाती है जहाँ दर्शक हर कल्पनाओं को यथार्थ मानता है। कभी तो वो अपनी समस्या, चिंता, अवसाद से दूर हो जाता है और कभी उसमें खुद को तलाशने की कोशिश करता है। वो ये भी भूल जाता है कि उसके बगल में बैठा इंसान अमीर है या गरीब, हिन्दू है या मुसलमान, ऊंच है या नीच। सिनेमा हॉल का ये अंधेरा कमरा भारत के वास्तविक प्रजातांत्रिक गुणों का सच्चा और सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। जहाँ न तो कोई भेदभाव होता है न ही किसी से कोई प्रतिस्पर्धा। सब एक ही दिशा में देखते हुए आनन्द की अनुभूति करते हैं।

सिनेमा भावनाओं का संसार होती हैं। अगर कोई फ़िल्म आपको भावात्मक रूप से नहीं जोड़ पाती तो उनका असफल (फ्लॉप) होना स्वाभाविक है। एक सफल सिनेमा में कहानी, उसके किरदारों का अभिनय, मेकअप, प्रकाश, ध्वनि, के साथ-साथ उसका फिल्मांकन सभी का सन्तुलित और प्रभावी होना आवश्यक है।

सिनेमा शब्द फ्रेंच शब्द है जो सिनेमेटोग्राफी का आंशिक शब्द है। सिनेमेटोग्राफी शब्द का प्रयोग और प्रचलन का श्रेय 1890 में लुमियर ब्रदर्स ने किया था। ये शब्द ग्रीक भाषा के दो शब्दों से बना है जो सिनेमा और ग्राफेन हैं सिनेमा का अर्थ मूवमेंट अर्थात गतिविधि तथा ग्राफेन का अर्थ लिखना या रिकॉर्ड करना है। इस प्रकार सिनेमेटोग्राफी का अर्थ हुआ गतिविधियों को रिकॉर्ड करना।

शुरूआत के दिनों में फ़िल्म स्ट्रिप मूवी कैमरे के माध्यम से गतिविधियों को रिकॉर्ड करने वाला फोटोग्राफर ही उस सिनेमा का डाइरेक्टर, प्रोड्यूसर सब कुछ होता था। किंतु बाद में सिनेमेटोग्राफी का दायरा बहुत बढ़ गया अब ये मात्र फोटोग्राफर की रचना न हो कर कई जटिल तकनीकों का समुच्चय बन गया जिसमें प्रकाश, ध्वनि, एडिटिंग, पोस्ट प्रोडक्शन आदि जैसे कई तकनीकी विधाएं इसका हिस्सा हुई।

वर्तमान समय में सिनेमा, सिनेमाघरों के अंधेरे कमरे की सीमाओं को लांघ कर हमारे घरो, दफ्तरों यहाँ तक कि मोबाइल के माध्यम से हमारी हथेलियों तक पहुंच चुका है। सिनेमा भी अब मात्र सिनेमा न हो कर डॉक्यूमेंट्री, ट्रेवल विडियो, म्यूजिक वीडियो, ऑनलाइन क्लासरूम, ट्रेनिंग वीडियो, सामाजिक-सांस्कृतिक विरासतों तथा शादी एवं अन्य संस्कारों के वीडियो के रूप में हमारे चारों ओर 24 घण्टे उपलब्ध है और इन सभी के फिल्मांकन सिनेमेटोग्राफी के दायरे में आता है।

शुरूआत की श्वेत-श्याम एवं मूक दौर से वर्तमान के अल्ट्रा 4K HD एवं डॉल्बी साउंड के साथ सिनेमेटोग्राफी का दायरा बहुत बढ़ चुका है।

वस्तुतः सिनेमेटोग्राफी किसी भी विषयवस्तु को उसके भाव के साथ सम्प्रेषित करने की कला है। इस कला के माध्यम से किसी भी कहानी के विभिन्न भावों को कैमरा एंगल, प्रकाश एवं दृश्य सयोंजन, ध्वनि और एडिटिंग के माध्यम से रोचक और आकर्षक बनाया जाता है। आजकल की शादियों तथा प्री एवं पोस्ट वेडिंग वीडियो भी सिनेमैटिक तरीके से बनाये जा रहे हैं। जिसमें प्रकाश सयोंजन, विभिन्न कैमरा एंगल, दृश्य सयोंजन आदि के द्वारा वर-वधु के प्रेम की भावनाओं तथा शादी समारोह की भव्यता को प्रदर्शित किया जाता है।

पूर्व में सिनेमेटोग्राफी पूर्णतः फोटोग्राफर की रूचि और कल्पनाओं पर निर्भर थी किन्तु अब सिनेमेटोग्राफी में मात्र फोटोग्राफर की दक्षताओं का ही नहीं अपितु कहानी, लोकेशन, सेट डिजाइन, उपलब्ध लाइट, कृत्रिम लाइट, साउंड, मेकअप जैसे कई छोटे बड़े घटकों पर निर्भर है।

स्टिल फोटोग्राफी में हम एक क्षण को कैद करते है पर सिनेमेटोग्राफी में एक पूरी कथा को निर्मित करते हैं। जिंदगी की जद्दोजहद, आपाधापी, दुख, खुशी, नाराजगी, प्रेम, भक्ति और रहस्य आदि सभी को दिखाना सिनेमेटोग्राफी के दृष्टिकोण से बहुत जटिल और श्रम साध्य है।

हालांकि लेख में सिनेमेटोग्राफी के सभी पक्षों को बंधना सम्भव नहीं है फिर भी अगले अंक में सिनेमेटोग्राफी के तकनीकी पहलुओं जैसे- सॉफ्टवेयर, उपकरण, लाइट आदि के साथ-साथ सिनेमेटोग्राफी से किस प्रकार भावों को तथा दृश्यों की भव्यता को प्रदर्शित किया जाता है इसकी चर्चा करने की कोशिश करेंगे।

समय के साथ फोटोग्राफर को फोटोग्राफी का अवसर खोजना होगा

त्विषाम्पति हुदाती, वाराणसी

आज हम बहुत लेख पढ़ रहें हैं जिसमें लिखा जा रहा है कि कैमरा कंपनी फोटोग्राफर को वर्कशॉप कराकर, गलत समझाकर, खाना खिलाकर, बेवकूफ बनाकर, कैमरा बेचकर लूट रहे हैं। बेचारा फोटोग्राफर इस करोना महामारी में बिना काम का, बिना पैसे के दम तोड़ रहे हैं। इसमें दोष किसका है, हम फोटोग्राफर का या कंपनी का। अब समय आ गया है कि प्रोफेशनल बनने का, कामर्शियल बनने का। आपको पहले ठीक करना होगा कि फोटोग्राफी में आपका कार्यक्षेत्र क्या है? देखा जाए तो हम फोटोग्राफी को मुख्य तीन धाराओं में बांट सकते हैं।

पहला आर्ट फोटोग्राफी, दूसरा डॉक्यूमेंट्री फोटोग्राफी, तीसरा कॉमर्शियल फोटोग्राफी। आर्ट फोटोग्राफी में जैसे- वाइल्डलाइफ फोटोग्राफी, लैंडस्केप फोटोग्राफी, पोट्रेट फोटोग्राफी, नेचर फोटोग्राफी, एस्ट्रो फोटोग्राफी, एरियल फोटोग्राफी, फाइन आर्ट फोटोग्राफी, अंडर वाटर फोटोग्राफी यह सब आता है। इसमें हम फोटोग्राफी करके आर्ट गैलरी या इंटरनेट पर फोटो बेचकर पैसा कमा सकते हैं। दूसरा आता है डॉक्यूमेंट्री फोटोग्राफी जिसमें व्यक्ति विशेष या किसी लैंडस्केप पर डॉक्यूमेंटेशन करके उस फोटो को न्यूज़ पब्लिशर या मैगजीन के पब्लिशर को भेजकर पैसा कमाया जा सकता है। नेट पर या फोटो गैलरी पर भी यह फोटो बेचा जा सकता है। इसके बाद आता है कॉमर्शियल फोटोग्राफी, जिसमें वेडिंग फोटोग्राफी से सबसे ज्यादा पैसा मिलता है। इसके अलावा प्रोडक्ट के लिए फोटोग्राफी, इंडस्ट्रियल फोटोग्राफी, आर्किटेक्चर फोटोग्राफी, स्पोर्ट्स फोटोग्राफी, फैशन फोटोग्राफी, कोई भी प्रोडक्ट के लिए मॉडलिंग फोटोग्राफी या टाइम लेप्स फोटोग्राफी (समय के अंतराल में एक ही स्थान से एक ही फ्रेम से अलग-अलग फोटो लेकर उसे एक साथ जोड़ कर एक अच्छा सा वीडियो बनाया जाता है) किया जा सकता है।

अब जब आपने अपना कार्यक्षेत्र ठीक कर लिए तो उसी हिसाब से आपको कैमरा खरीदना है, इसमें यह भी देखना है कि आपको जो फोटो बनाना है वह कितने बड़े आकार का है। साथ में लेंस और फ्लैश लाइट भी अपने हिसाब से खरीदना है। जहाँ हाफ फ्रेम कैमरे से काम चलेगा वहाँ फुल फ्रेम कैमरा की जरूरत नहीं है। जहाँ 4.5 या 5.6 के लेन्स से काम चलेगा वहां 1.2, 1.4, 1.8 क्या 2.8 लेंस की जरूरत नहीं है। जब आप स्वयं जागरूक होंगे तो आप किसी भी बहकावे में नहीं आएंगे। आज समय आ गया सेफ्टी, स्टे एट होम का। इसमें भी कॉमर्शियल फोटोग्राफी का स्कोप बड़ा है, टीचिंग ऑनलाइन होने से बहुत से लोग ऑनलाइन कोचिंग क्लास चला रहे हैं, उसमें फोटोग्राफर की सख्त जरूरत है। लोग ऑनलाइन क्लासेज बेचते हैं, ऑनलाइन सामान, प्रोडक्ट भी बिक रहा है उससे फोटोग्राफर का स्कोप बढ़ा है, फोटो देखकर जब खरीदारी करना है, तो फोटो अच्छा होना चाहिए, इसमें भी स्कोप है। अब कोई भी कार्यक्रम में ज्यादा भीड़ नहीं होगी, इसलिए प्रोग्राम लाइव करना होगा, जिससे दूर-दूर के लोग उस प्रोग्राम में भाग ले सकें ,जैसे यूट्यूब या इंटरनेट में प्रसारण। इससे भी नया काम मिलेगा। एग्जामिनेशन में लोग इंस्पेक्शन के लिए दूर से नहीं आ पाएंगे, इसके लिए उसे डॉक्यूमेंटेशन के लिए फोटोग्राफी कराना होगा। सब मिलकर फोटोग्राफर को निराश होने की जरूरत नहीं है, हर एक समय फोटोग्राफर की जरूरत पड़ेगी। इसी तरह फोटोग्राफर को समय के साथ-साथ अपना अवसर खोजना होगा, निराश होने से काम नहीं चलेगा।

घर बैठे फोटोशॉप सीखें

राजेन्द्र प्रसाद
ARPS (LONDON), FICS (USA)
HON FSAP (INDIA), ASIIPC (INDIA)
डिजिटल इमेजिंग डिवीजन इंडिया इंटरनेशनल फोटोग्राफिक काउंसिल नई दिल्ली के अध्यक्ष
Blog - https://digicreation-blogspot-com/
You Tube : www.youtube.com/channel/UCZM4BH-m5bxnVetkWoyPoMQ

(भाग-10)

Magic Wand Tool (मैजिक वैंड टूल)

मैजिक बैंड फोटोशॉप का एक बहुत ही पुराना सिलेक्शन टूल है। अन्य सिलेक्शन टूल्स फोटो के पिक्सेल को उनके शेप्स या उनके किनारों के आधार पर सिलेक्शन करते हैं। जबकि मैजिक बैंड टूल पिक्सल्स को उनके कलर और टोन के आधार पर सेलेक्ट करता है।

इस ट्यूटोरियल में हम यह समझेंगे कि वास्तव में मैजिक बैंड टूल किस तरह काम करता है। मैजिक बैंड टूल को सेलेक्ट करने के लिए क्विक सिलेक्शन टूल के आइकॉन पर माउस रखकर 1 या 2 सेकंड तक होल्ड करें आपके सामने एक फ्लाईआउट मीनू बॉक्स आ जाएगा इस पर क्लिक करके मैजिक बैंड टूल को सेलेक्ट कर लें।

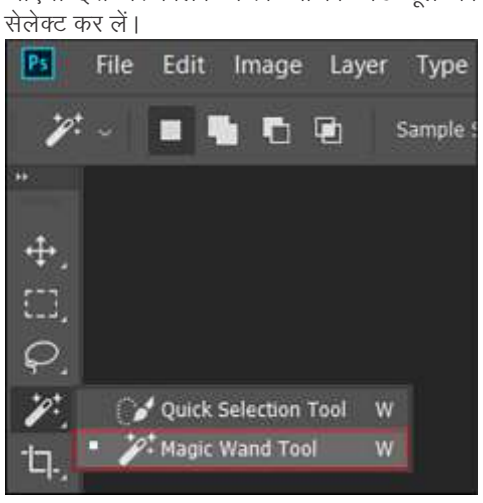

आइए देखते हैं कि यह टूल कैसे काम करता है? इसके काम करने के तरीके को दर्शाने के लिए मैंने पहले से ही यह इमेज खोल कर रखा है जिसे अभी आप स्क्रीनशॉट में देख रहे हैं। यह इमेज विशेष रूप से आपको इस टूल को समझाने के लिए ही बनाया गया है आप इसे कॉपी कर अपने फोटोशॉप में खोलें और उसी पर प्रैक्टिस करें।

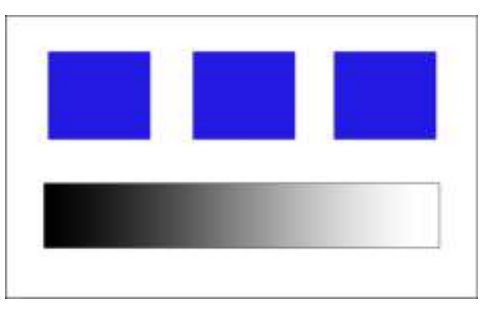

इस टूल से जब हम इमेज के किसी एरिया पर क्लिक करते हैं तो यह इमेज के उन सभी पिक्सल्स को सेलेक्ट करता है जिसका कलर और टोन क्लिक की

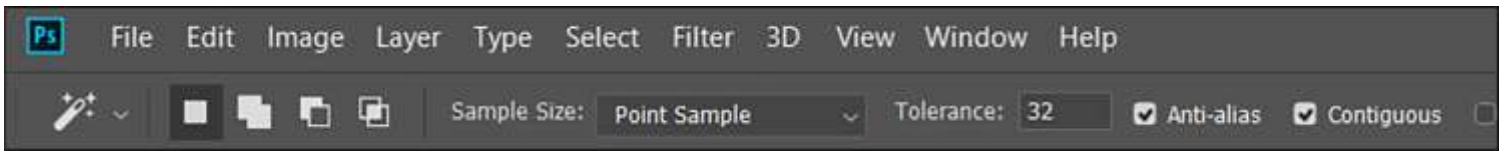

हुई पिक्सल के समान है। इस टूल की यह विशेषता इसे इस तरह के स्थान को सेलेक्ट करने के लिए उपयुक्त बनाती है जहाँ बड़ी एरिया का टोन और कलर एक समान होता है।

उदाहरण के लिए मान लें कि इस इमेज में हम ऊपर बाएं तरफ स्थित ब्लू स्क्वायर को सेलेक्ट करना चाहते हैं तो हमें इस स्क्वायर के किसी भाग पर मैजिक वैंड टूल से क्लिक कर देना है। आप देखेंगे कि मात्र एक क्लिक से यह टूल पूरे स्क्वायर को सेलेक्ट कर लेता है।

ब्लू स्क्वायर को सेलेक्ट करना बहुत ही आसान था आइए अब हम देखें कि जब हम बीच में स्थित ब्लैक एण्ड वाइट ग्रेडियंट के सेंटर को इस टूल से क्लिक करते हैं तो यह क्या करता है। आप इस टूल से ग्रेडियंट के सेंटर पर क्लिक कर दें इस बार आप देखेंगे कि इस टूल ने केवल उन सभी पिक्सिज को सिलेक्ट किया है जो टोन और कलर में उस पिक्सेल से मिलते हैं जिस पर हमने क्लिक किया था। यह टूल इस समय यह टूल पूरे ग्रेडियंट को सेलेक्ट नहीं करता है।

अब टूल ऑप्शन बार के सेटिंग्स को देखें टूल ऑप्शन बार मीनू बार के नीचे होता है यहाँ आपको एक टोलरेंस सेलेक्ट करने का बॉक्स मिलेगा और आप यहाँ देखेंगे कि डिफ़ॉल्ट रूप से यह 32 पर सेट है।

टोलरेंस ऑप्शन मैजिक वेंड को बतलाता है कि जिस पिक्सेल पर क्लिक किया गया है उसके अलावा उसे कितने मिलते-जुलते पिक्सेल को यह सेलेक्ट कर सकता है। यहाँ पर टोलरेंस वैल्यू 32 पर सेट है इसका मतलब यह है कि जिस पिक्सेल पर हमने क्लिक किया है उससे 32 शेड्स डार्कर और 32 शेड्स ब्राइटर पिक्सेल को इसे सेलेक्ट करना है।

अब टोलरेंस वैल्यू में आप 60 टाइप करके फिर से ग्रेडियंट के सेंटर पर क्लिक करें। इस बार आप देखेंगे कि यह टूल पहले से अधिक एरिया को सेलेक्ट करता है क्योंकि इस बार आपने जिस पिक्सेल पर क्लिक किया है यह उस से 60 शेड्स ब्राइटर और 60 शेड्स डार्कर पिक्सेल को सेलेक्ट कर रहा है।

मान लें कि आप किसी स्पेसिफिक शेड के ग्रेट टोन को सेलेक्ट करना चाहते हैं और यह चाहते हैं कि उसके अलावा और कुछ भी सेलेक्ट नहीं हो तो इसके लिए टोलरेंस वैल्यू में जीरो टाइप कर दें। यह मैजिक वेंड को यह संदेश देता है कि केवल उस पिक्सेल को सेलेक्ट करो जहाँ टोन और कलर क्लिक किए गए पिक्सेल से एक्जेक्टली मिलता हो। टोलरेंस वैल्यू को जीरो पर सेट करने के बाद आप उसी स्पॉट पर फिर से क्लिक करें और इस बार आप देखेंगे कि इसने एक छोटे एरिया को ही सेलेक्ट किया है। आपने जिस पॉइंट पर क्लिक किया है उस पॉइंट के टोन और कलर से अलग सभी पिक्सेल को इसने सेलेक्ट नहीं किया है।

टोलरेंस वैल्यू को आप 0 से 256 तक रख सकते हैं जितना ज्यादा टोलरेंस होगा उतनी ज्यादा कलर और टोन रेंज के पिक्सेल को यह सिलेक्शन करेगा।

टूल ऑप्शन बाद में आपको टोलरेंस के बाद एंटी एलीआइसिंग का ऑप्शन मिलेगा डिफ़ॉल्ट रूप से यह आन रहता है और इसे आप ऑन ही रहने दें क्योंकि यह आपके सेलेक्शन के किनारों को स्मूथ बनाता है।

इस ट्यूटोरियल की शुरूआत में आपने गौर किया होगा कि जब आपने एक ब्लू स्क्वायर को क्लिक किया था तो पूरा स्क्वायर एक क्लिक में सेलेक्ट हो गया था लेकिन और 2 स्क्वायर जो कलर और टोन में पहले वाले स्क्वायर से मिलते जुलते थे उसे इसने सेलेक्ट नहीं किया।

अब आप कंटीन्यूअस ऑप्शन को अनचेक करें और फिर से पहले की तरह ब्लू स्क्वायर पर क्लिक कर दें। इस बार आप देखेंगे कि इस टूल ने उन सभी स्क्वायर्स को भी सेलेक्ट कर लिया है जिसका टोन और कलर पहले वाले स्क्वायर के समान था। यानी टोलरेंस और कंटीन्यूअस ऑप्शन को फाइन ट्यून कर आप स्कूल के बिहेवियर पर काबू पा सकते हैं।

अब आइए एक रियल वर्ल्ड एग्जामपुल लेते हैं मैं अभी एक लैंडस्केप इमेज को खोल रहा हूँ जिसे आप स्क्रीनशॉट में देख सकते हैं। इस लैंडस्केप का स्काई डल और बोरिंग है। जबकि लैंडस्केप सुंदर है। अगर हम इस लैंडस्केप के स्काई को हटाकर उसकी जगह एक अच्छे स्काई को पेस्ट कर दें तो यह इमेज लाजवाब बन जाएगा। मैजिक वैंड टूल को सेलेक्ट करें और कंटीनुअस ऑप्शन को चेक कर दें और टोलरेंस 10 करके स्काई के किसी एरिया पर पर क्लिक कर दें जैसा कि आप देखेंगे कि इस टूल ने स्काई के कुछ भाग को ही सेलेक्ट किया है पूरे स्काई को नहीं। ऐसा इसलिए है कि हमने टोलरेंस वैल्यू का चुनाव सही नहीं किया है अब कंट्रोल जेड दबाकर आप कर यह सिलेक्शन हटा दें अब टोलरेंस वैल्यू में आप 30 टाइप कर दें और मैजिक वेंड से उसी एरिया पर क्लिक कर कर दें। आप देखेंगे कि इस बार इस टूल ने बस एक ही क्लिक में पूरे स्काई को सिलेक्ट कर लिया है आपके अपने फोटो में टोलरेंस वैल्यू को एक या दो बार अलग-अलग सेट करके ट्राई करना पड़ सकता है इसलिए याद रखें कि मैजिक वैंड टूल के टोलरेंस को सही चुनकर आप इस टूल को फाइन ट्यून करके सिलेक्शन को अधिक एक्यूरेट बना सकते हैं। एक बात और जान ले अगर एक बार किये हुए सिलेक्शन में आप कुछ और जोड़ना चाहते है तो मैजिक वेंड से क्लिक करने के पहले शिफ्ट बटन को दबा कर रखें आप देखेंगे कि फिर से किया गया सिलेक्शन पहले वाले सिलेक्शन से जुड़ जाता है।

अब मैं एक नई इमेज को खोल रहा हूं जिसे आप स्क्रीनशॉट में देख सकते हैं। इस इमेज में अच्छी स्काई और क्लाउड है इस इमेज को खोलने के बाद कंट्रोल प्लस बटन को दबाएं इससे यह पूरी इमेज सिलेक्ट हो जाएगी। याद कर लें कि जब भी किसी इमेज को पूरा सेलेक्ट करना हो तो यह शॉर्टकट इस्तेमाल करना आसान होता है और आपको किसी सिलेक्शन टूल का

इस्तेमाल करने की भी जरूरत नहीं पड़ती। अब कंट्रोल प्लस सी बटन को दबाएं इससे यह इमेज कॉपी हो जाएगी अब आप फिर से लैंडस्केप इमेज को क्लिक करके एक्टिवेट कर लें इसके बाद एडिट मेनू में पेस्ट स्पेशल पर क्लिक करें आपके सामने एक फ्लाइआउट मीनू खुल जाएगा जिसे आप स्क्रीनशॉट में भी देख रहे

होंगे यहाँ पेस्ट इन टू कमांड पर क्लिक कर दें। आप देखेंगे कि पहले के बोरिंग स्काई के स्थान पर नई स्काई पेस्ट हो गई है। V बटन दबाकर मूव टूल को एक्टिवेट कर लें और नए स्काई की पोजीशन को सही कर लें।

इस ट्यूटोरियल में आपने मैजिक वेंड टूल के बारे में जानकारी प्राप्त की साथ ही साथ यह भी सीखा कि इसी बोरिंग स्काई की जगह पर दूसरे स्काई को कैसे पेस्ट किया जा सकता है और लैंडस्केप को कैसे सुंदर बनाया जा सकता है।

अगली बार एक नए ट्यूटोरियल के साथ फिर आपसे मुलाकात होगी तब तक के लिए मुझे आज्ञा दें।

YouTube चैनल के लिये QR कोड स्कैन करें।

STUDIO NEWS
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 6 अगस्त 2020 से 5 सितम्बर 2020

एक अच्छी तस्वीर किसी लम्हे को काल की गोद में कहीं खो जाने रोकने में सबसे सक्षम है। - युडोरा वेल्टी

EOS R SYSTEM

Canon
Delighting You Always

EOS R5 ... नये युग का आगाज़

लंबे समय से जिस फुल फ्रेम मिररलेस कैमरे का इंतजार था, वह EOS R5 कैनन ने लॉन्च कर दिया है। यह फुल फ्रेम मिररलेस कैमरा मार्केट में गेम चेंजर साबित होगा। यह बना है RF माउंट से और इसमें है कैनन की आधुनिक तकनीक, जो कि खास उन फोटोग्राफर्स के लिए है जिनका नजरिया एडवांस फोटोग्राफी का है।

45 MP के साथ बेहतरीन डिटेल

45.0 MEGA PIXELS CMOS

DIGIC X प्रोसेसर के साथ काम करते हुए, EOS R5 में है नया 35mm फुल फ्रेम CMOS सेंसर लगभग 45-मेगापिक्सल के साथ। इसका सेंसर डेटा रीडिंग स्पीड व AF गणना की सटीकता बढ़ाता है

जो कि EOS R को 8K मूवी क्लिप रिकॉर्ड करने व बर्स्ट शूटिंग स्पीड 20 fps तक स्टिल फोटोज़ क्लिक करने देता है। EOS R5 में प्रयोग हुआ DIGIC X इमेजिंग इंजन में है न्वाइज प्रोसेसिंग इनोवेशन जो कि स्टिल में ISO 100-51200 और मूवी में ISO 100-25600 का मानक रेंज प्रदान करता है।

मूवी में बेहतरीन सिनेमैटिक रिज्यॉल्यूशन

8K
RAW Full Frame @30p

यह देता है 8K इंटरनल RAW रिकॉर्डिंग 30 fps तक व 4K पर 120 fps तक, यह या तो 4:2:2 10 बिट कैनन लॉग या 4:2:2 10 बिट HDR पर चुना जा सकता है और इसमें डुअल पिक्सल CMOS AF II 8K व 4K वीडियो रिकॉर्डिंग में भी उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त, कैमरे का 8K वीडियो कैप्चर

क्षमता यूजर्स को वीडियो फुटेज से हाई रिज्यॉल्यूशन स्टिल इमेज देता है, और 8K वीडियो अधिक क्वालिटी 4K वीडियो में प्रोसेस करता है।

4K 120fps ड्रामाटिक स्लो मोशन के साथ कहानियां रचता है

4K
120p

EOS R5 मूवी रिकॉर्ड कर सकता है 120 fps तक, 4K DCI/UHD में। यह फीचर AF ट्रैकिंग क्षमता के साथ मिलकर देता है हाई रिज्यॉल्यूशन 4K मूवी जो कि शार्प फोकस के साथ बैकग्राउंड में चल सकती है। कैमरा में इंम्प्रेसिव क्षमता है 120fps तक इंटरनल व एक्सटर्नल* 4K शूटिंग की।

*एक्स्टर्नल रिकॉर्डिंग उपलब्ध है 4K मात्र 60 fps तक।

अस्थिर परिस्थितियों में शूटिंग स्टैबिलिटी

IN-BODY IMAGE STABILIZER

EOS R5 कैनन का पहला कैमरा है जिसमें है 5-एक्सिस IBIS। यह न केवल कम शटर स्पीड में स्टिल इमेज शूट करने की क्षमता को निखारता है बल्कि हैंडहेल्ड शूटिंग के दौरान हाई क्वालिटी मूवी भी कैप्चर करता है चाहे परिस्थिति कैसी भी

हो। कैमरा अकेले या IS लेंस के साथ, 5एक्सिस इमेज स्टैबिलाइजेशन सिस्टम पूरे जूमिंग रेंज के, वाइड एंगल से लेकर टेलीफोटो तक, कैमरे के हिलने से ब्लर को ठीक करता है। अस्थिर पोजिशन में हैंडहेल्ड शूटिंग के दौरान यह बेहद सहायक है।

विश्वसनीयता

EOS R5 कम्पैक्ट बॉडी है। इसकी बाहरी व मुख्य बॉडी शक्तिशाली, हल्के वजन की है। EOS R5 कई प्रकार के मौसम के अनुसार डिजाइन किया गया है। EOS R5 कैमरे में यह क्षमता है कि जब कैमरा बंद हो तो शटर बंद हो जाता है ताकि लेंस बदलते समय सेंसर क्षेत्र में धूल न पहुंचे। 500000 साइकल तक शटर की लाइफ होती है।

नई जेनरेशन कैनन RF लेंस

नए RF लेंस ने कैनन की अद्भुत लेंस डिजाइन करने की काबिलियत को सामने रख दिया है। 54mm डायामीटर RF माउंट सिस्टम में सर्वश्रेष्ठ नतीजे पहुचांने की क्षमता रखता है। हर RF लेंस में एडवांस ऑप्टिकल डिझाजन बिल्ट इन लेंस डेटा है डिजिटल लेंस ऑप्टिमाइजर के लिए। RF लेंस नया डिजाइन हुआ 12पिन हाई स्पीड कम्यूनिकेशन सिस्टम भारी डेटा तेज व हाई स्पीड में ट्रांसफर करता है। फोकस रिंग व जूम रिंग के अलावा, RF लेंस में नया कंट्रोल रिंग है जिससे यूजर्स एक्सपोजर सेटिंग फंक्शन असाइन कर सकते हैं।

महान विभूतियाँ

सूरज एन. शर्मा

(1931 - 2011)

सूरज एन शर्मा ... एक ऐसी शख्सियत जो कि अपने शीर्षतम दिनों में, अपने नाम की ही तरह फाटोग्राफी की दुनिया के सूरज की तरह रहे। उनका जन्म 4 अगस्त, 1931 को हुआ था। अपने कार्य के कारण सूरज एन शर्मा की ख्याति बहुत दूर तक गई, अंतरराष्ट्रीय स्थलों पर, राजस्थान के उन गावों में जिनके बारे में अब तक लोग भी नहीं जानते होंगे, व भारत के अन्य दूर-दराज़ जगहों पर अपनी फोटोग्राफी के बूते वह चमके।

कक्षा 12 में पढ़ते वक्त एक बार उन्होंने अपने पिता से एक कैमरे की मांग की, इकलौती संतान होने के नाते पिता ने एक झटके में उनकी बात मानकर एक कोडैक कैमरा अपने पुत्र को भेंट किया। उनके पिता जयपुर के नामचीन घड़ीसाजों में से एक थे, जयपुर के त्रिपोला में उनकी काफी बड़ी दुकान भी थी।

जयपुर निवासी श्री सूरज एन शर्मा जयपुर में राजस्थान सरकार के बहीखाता व सामान्य दफ्तर में फुल टाइम कार्यरत थे। उनके तीन संतान थीं, घर संभालने के बावजूद उन्होंने अपना पूरा जीवन एक फोटोग्राफर के तौर पर सक्रिय रखा। उनका जज्बा इस प्रकार था कि वे स्कूटर व साइकिल से कार्यक्रम को कैप्चर करने दिल्ली तक जाते थे। वह दिनभर ऑफिस के काम के बाद भी घंटों अपनी लैब अथवा अपने घर में काम करने की क्षमता रखते थे।

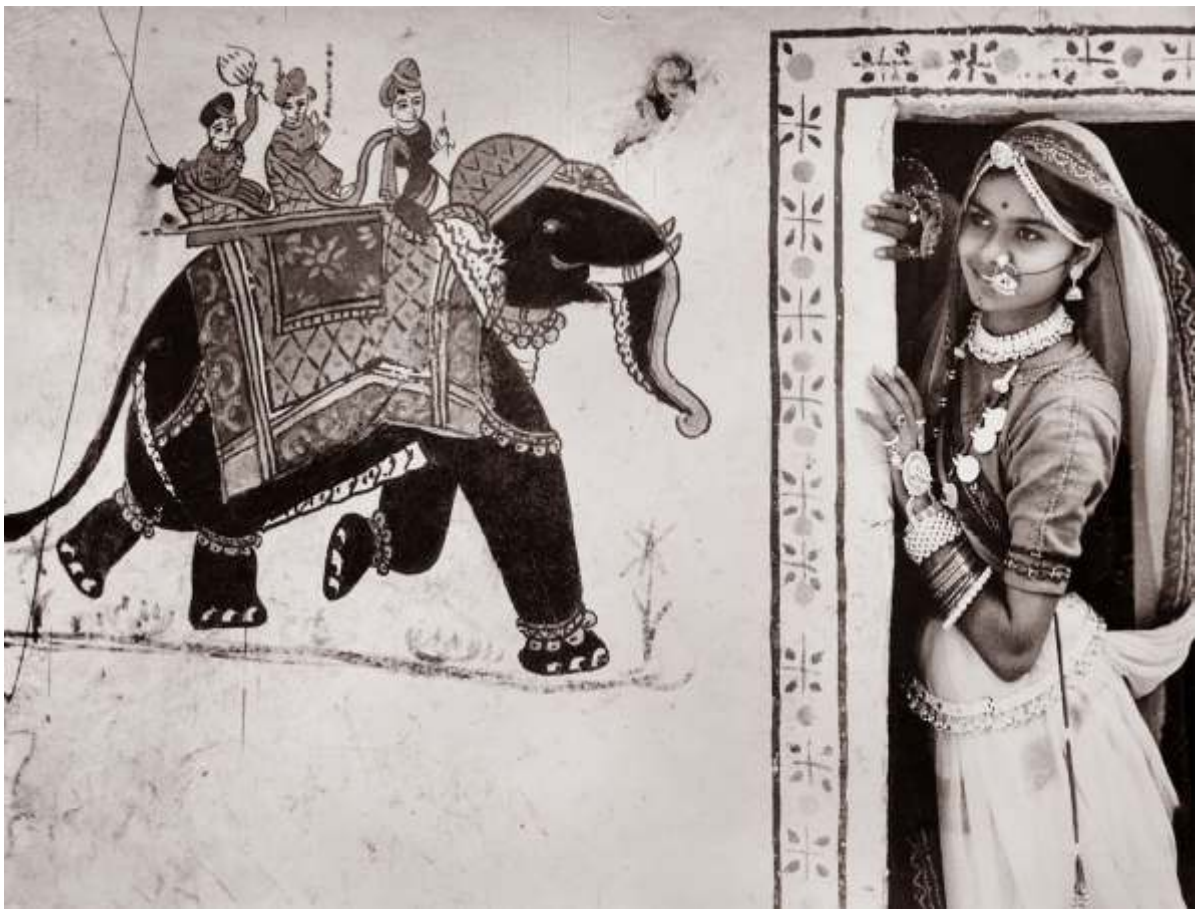

फोटोग्राफी में दिलचस्पी दिखाने वाले पड़ोसियों को वे फोटोग्राफी आउटिंग पर लेकर जाते थे व उनका नेतृत्व करते थे। बेहद शांत स्वभाव के सूरज अपनी ही दुनिया में मस्त रहना पसंद करते थे, शूट की तैयारियों व इंतज़ामात में घंटों खुद को व्यस्त रखते, वह कहते थे कि सबसे ज़रूरी चीज़ याद रखने की यह है कि फोटोग्राफी कला तो है ही, साथ ही तकनीक भी है। दिनभर के काम के बाद वह फोटो टूर करते थे, इसमें शाम को वह लोगों से मिलते और बाते करते जिसके फलस्वरूप उनके दिल और दिमाग पर सदैव संतोष का भाव होता।

उन्होंने अपना सम्पूर्ण काम एनालॉग कैमरा उपकरण से किया, एक्स्पोजर व कम्पोजिशन पर उनकी महारथ थी और वह एकदम सटीक होता था। राजस्थान की युवा पीढ़ी जो फोटोग्राफी का शौक रखती है वह उनकी मुरीद है। उनके अनेक छात्र राजस्थान में फोटोग्राफी के प्रमुख पदों पर आसीन हैं। एक छात्र श्री राकेश शर्मा "राजदीप" इस वक्त लेक सिटी कैमरे क्लब के प्रेज़िडेंट हैं और कई समाचार पत्रों के प्रमुख पदों पर रह चुके हैं।

उनका मंत्र था भज ले सो राम, कर ले

STUDIO NEWS
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 6 अगस्त 2020 से 5 सितम्बर 2020

किसी वस्तु को तस्वीर में अलग-अलग उतारने की कला असली फोटोग्राफी है। - गैरी विनोग्राण्ड

सो काम, इसका मतलब है कि काम ऐसा करो जिससे सुकून मिले। उनका मानना था कि आपको आसपास के माहौल, सूर्य की दिशा, आसमान, सब्जेक्ट का मूड, सब्जेक्ट की पोजिशन, सीन पर कैमरे का इफेक्ट, इत्यादि पर निर्भर रह के काम करना पड़ता है, ऐसे में आप एक दिन में पूरा प्लान नहीं कर सकते। उनका मानना था कि प्रत्येक परिस्थिति के लिये सैदव तैयार रहना बहुत आवश्यक है और अपने काम के प्रति सदैव मेहनती और ईमानदार होना अनिवार्य है।

उनकी उपलब्धियाँ ही उनकी लगन व मेहनत का नतीजा हैं। उन्हें राजस्थान के शाही हस्तियों ने सिटी पैलेस जयपुर में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से नवाज़ा। सबसे बड़ी उपलब्धि उनकी यह है कि फोटोग्राफी जैसे अच्छे खासे महंगे शौक को वह जीवित रख पाए और इसी को उन्होंने अपनी पहचान बनायी। अंतरराष्ट्रीय मार्केट में उनकी तस्वीरों की भारी मांग थी जिसकी वजह से उन्होंने अच्छे खासे पैसे कमाकर अपने जज़्बे को कायम रखा। न केवल राजस्थान में बल्कि अपनी उम्दा तस्वीरों को चलते वह पूरे भारत में मशहूर थे। 13 अक्टूबर 2005, उनको सवाई राम सिंह (द्वितीय) अवार्ड, जयपुर के महाराजा सवाई मान सिंह के द्वारा दिया गया। अपनी फोटोग्राफी कला के लिए उन्हें 1960 में स्विटज़रलैंड में हॉनर किया गया, 1991 में भारतीय काउंसिल ने भी उन्हें पुरस्कृत किया।

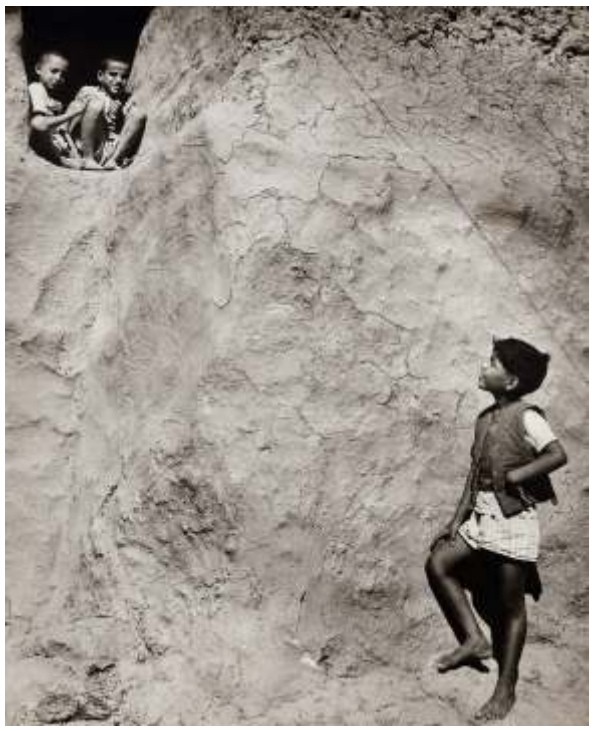

सूरज एन शर्मा एक प्रसिद्ध फोटोग्राफर, कला आलोचक, शिक्षक व एक ऐसी शख्सियत थे जिन्होंने राजस्थान के टूरिज्म को बढ़ाने के लिए बहुत काम किया। उनकी 5000 से भी अधिक तस्वीरें कई मैगजीन में प्रकाशित हुई। कोडैक, अगफा, इंदू, कोनिका व सुपर प्लस जैसी प्रसिद्ध कंपनियों ने उनकी तस्वीरों का उपयोग कर अपने उत्पादों को प्रमोट किया।

उनकी तस्वीरें जापान, अमेरिका, ताइवान, फ्रांस, इंग्लैंड, जर्मनी व सिंगापुर में प्रदर्शित हुई। उन्होंने 20 से अधिक वनमैन शो जयपुर में किए। अपनी तस्वीरों के माध्यम से उन्होंने राजस्थान की संस्कृति और सांस्कृतिक पहचान को उजागर करने के लिए बहुत काम किया। वह अपनी तस्वीरों के साथ अकसर दिल्ली जाकर दिल्ली प्रेस व अन्य प्रकाशन केंद्र जाते थे जहाँ अपनी तस्वीरें दिखाते थे। उन दिनों उनकी तस्वीरें "मुक्ता", "सरिता", "धर्मयुग", जैसी तमाम प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं।

दिल्ली में उनकी मुलाकात फोटो डिविजन के निर्देशक स्वर्गीय पद्मश्री टी कासीनाथ जी, व महान फोटोग्राफर्स जैसे स्वर्गीय ए.एल. सैय्यद, स्वर्गीय पी.एन. मेहता व महान फोटोग्राफर श्री ओ.पी. शर्मा से हुई। इन महान फोटो आर्टिस्टों से मिलना व बात करना सूरज शर्मा को लाभदायक हुआ और उन्हें अपनी तकनीक व फोटोग्राफी की पिक्टोरियल स्किल को सुधारने का मौका मिला। उन्होंने जयपुर में एक स्टूडियो खोला जिसका नाम "क्लिक" रखा, यह अभी भी उसी जगह पर है व इसका संचालन उनके बेटे द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने जयपुर में पिंक सिटी कैमरा नाम से एक क्लब का गठन किया जिसमें वह संस्थापक अध्यक्ष थे।

19 अप्रैल, 2011 को सूरज एन शर्मा का निधन हो गया, लेकिन उनके द्वारा किए गए कार्य व रचनाएं आज भी जीवित है और सदैव रहेंगी। अपनी कला से जो रोशनी उन्होंने देश व विदेश में बिखेरी है, उसके माध्यम से वह हमेशा लोगों के दिलों में जीवित रहेंगे।

मैं अपने मित्र व लेक सिटी कैमरा क्लब, उदयपुर के प्रेज़िडेंट श्री राकेश शर्मा 'राजदीप' का शुक्रिया अदा करना चाहूंगा जिन्होंने मुझे स्वर्गीय सूरज एन शर्मा जी की तस्वीरें उपलब्ध कराईं। साथ ही श्री अजय पारेख व श्री जी.आर. असनानी का भी धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने मुझे सूरज जी के बारे में काफी जानकारी दी।

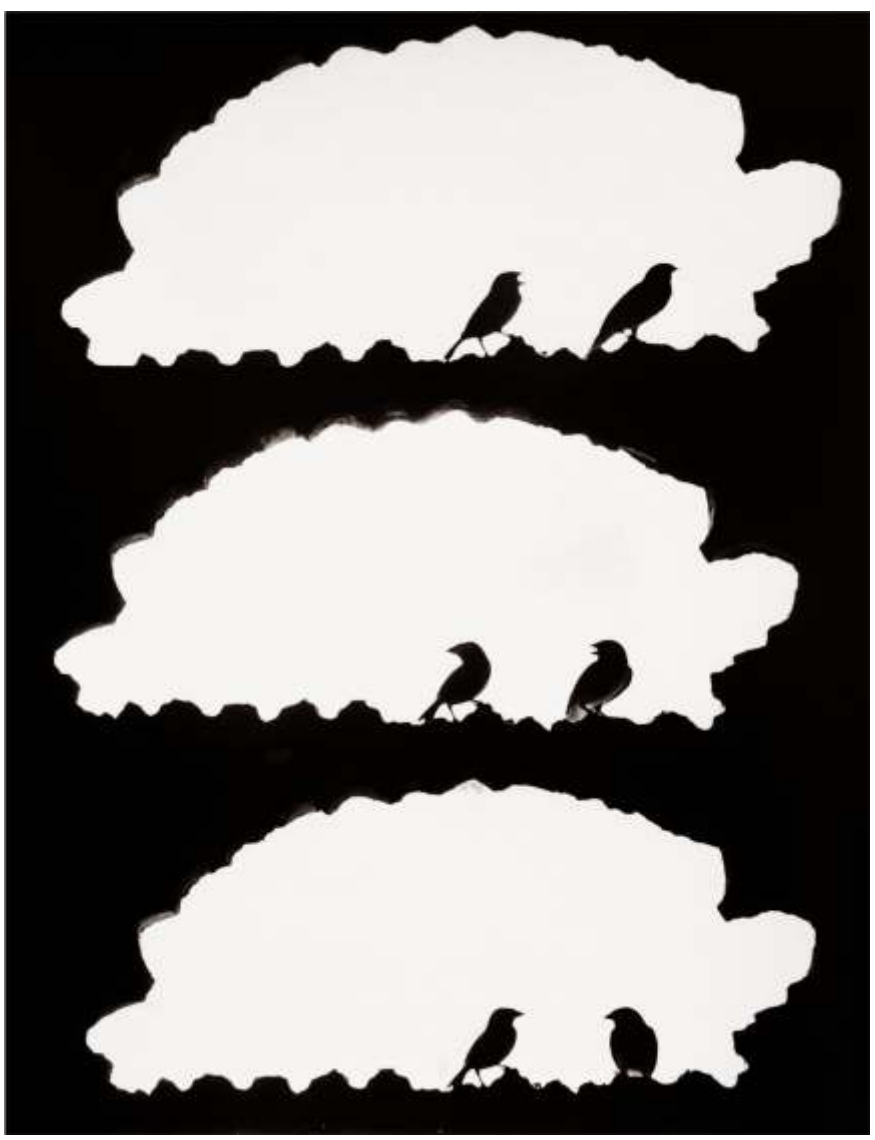

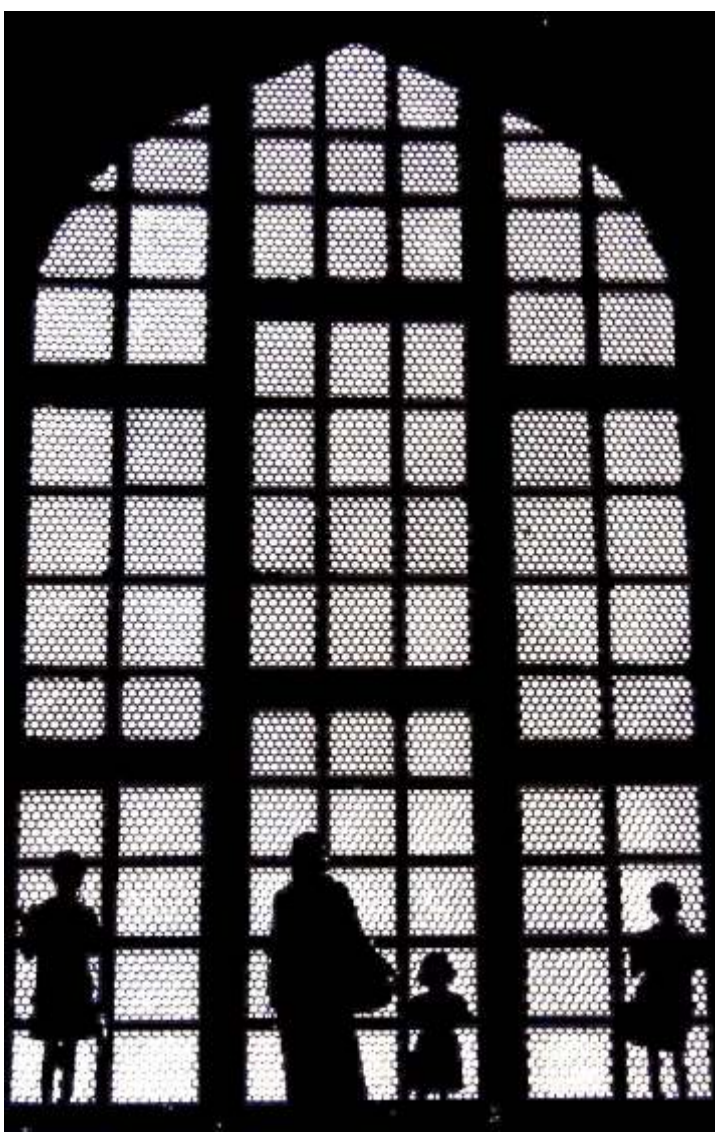

अनिल रिसाल सिंह
MFIAP (France), ARPS (Great Britain), Hon.FIP (India), Hon.LCC (India), FFIP (India), AIIPC (India), Hon.FSoF (India), Hon.FPAC (India), Hon.TPAS (India), Hon.FSAP (India), Hon.FICS (USA), Hon.PSGSPC (Cyprus), Hon.FPSNJ (America), Hon. Master-TPAS (India), Hon. Master-SAP (India), Hon.FWPAI (India), Hon.FGGC (India), Hon.GA-PSGSPC (Cyprus)
पूर्व अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ इण्डियन फोटोग्राफी

कोविड-19 के दौरान फोटोग्राफी

मुकेश श्रीवास्तव
FIE, FFIP, EFIAP
इंजीनियर, फोटोग्राफर, लेखक,
पूर्व निदेशक (ई), भारत सरकार
निदेशक, सेण्टर फॉर विजुअल आर्ट्स
निकॉन मेण्टर (2015-2017)
एवं अध्यक्ष, धनबाद कैमरा क्लब

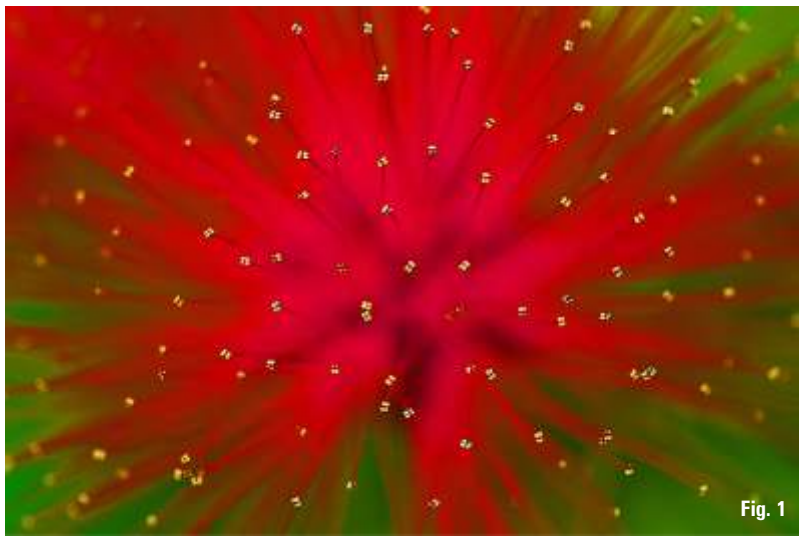
Fig. 1

Fig. 2

यूं लग रहा है कि एक लम्हे के लिए दुनिया थम गई है, या शायद पूरी तरह बदल चुकी है। कला के क्षेत्र से जुड़े हुए कई लोग इस वैश्विक आपदा में संघर्ष कर रहे हैं। जैसे कि छायाकार, भले ही एक छायाकार या छायाकारों का समूह, या फिर कोई संगठन ही क्यों न हो, सभी इस आपदा में जूझ रहे हैं। कोविड-19 की परिस्थितियों से हम सभी के जीवन में कुछ न कुछ असर पड़ा है और शायद अभी यह सिलसिला जारी रहे।

कई फोटोग्राफर्स पोर्च पोर्टेचर पर काम कर रहे हैं। इसमें वे दूरी का पालन करते हुए परिवार की तस्वीर उन्हीं के घर के सामने ले रहे हैं।

हम इंसानों को बहुत अधिक बदलाव नहीं पसंद है, खासकर कि तब जब परिवर्तन थोपा गया हो और हम ऐसी स्थिति में हों कि कुछ भी न कर सकें। यह ऐसा है कि हम बेबस हैं और हमारे हाथ में कुछ भी नहीं। यह स्थिति उतनी ही तेजी से अनिश्चित हो रही है जितनी तेजी से कोरोना की रफ्तार बढ़ रही है।

शुरूआती दौर में जब पूरे विश्व के साथ हमारा देश भी लॉकडाउन से गुज़रा तो फोटोग्राफर्स के लिए जोरदार झटका था। अप्रैल से जून तक अधिकतर फोटोग्राफर्स की 80 से 100 फीसद तक की बुकिंग पर फर्क पड़ा था। फुल व पार्ट टाइम, दोनों ही फोटोग्राफर की औसत कैंसिल बुकिंग देखें तो यह 90 फीसद है।

मैंने श्री बिरेन पटनायक जी से बात की, जो कि पूर्वी भारत में नामी वेडिंग फोटोग्राफर हैं और कोविड 19 की स्थिति को गहनता से अध्ययन करने के लिए सोनी मेंटर हैं। उन्होंने इस विषय पर अपनी राय रखी जो कि इस प्रकार है:

कोविड 19 के कारण 2020 मार्च से देशभर के सभी व्यवसाय व अनुष्ठान पूरी तरह से ठप हो गए हैं। शादी समारोह के लिए भी 50 लोगों की अनुमति है, इसी कारण कईयों ने विवाह कार्यक्रम टाल दिए हैं। समस्या सबसे बड़ी यह है कि 70 फीसद फोटोग्राफर्स दैनिक के हिसाब से रोजीरोटी कमाते थे उनके लिए स्थितियां गंभीर हो चुकी हैं। जहां शादियां हो भी रही हैं, जहां फोटोग्राफर्स अपनी जान की परवाह न करते हुए कम रेट में काम कर रहे हैं।

टीवी चैनलों व अखबारों में हर दिन हम सुनते-पढ़ते हैं कि मास्क पहनें व दूरी बनाकर रखें, तथा जरूरत न पड़ने पर घर से न निकलें। कम रेट में काम कर रहे फोटोग्राफर्स में यदि कोई कोरोना पॉजिटिव निकल आता है तो क्या होगा? उनके परिवार की देखरेख कौन करेगा?

इसका न किसी के पास जवाब है, न ही कोई खोजने को तैयार है। यदि पैसे न कमाएं तो भी आफत, कमाने के लिए निकलें तो भी। क्यों नहीं अधिक पैसे लेकर खुद को अपने साथियों को बचाकर रखें। कोरोना से बचाव के लिए फोटोग्राफर्स को पीपीई किट, सैनिटाइजर व 70-200 एमएम लेंस की जरूरत है। अच्छे पॉवर व फुल लाइट की जरूरत है। यदि फोटोग्राफर्स कम दाम पर काम करेंगे तो इन सब सामान के पैसे कहां से आएंगे और कौन जान की जिम्मेदारी लेगा? ज़रा सोचिए, मेकअप आर्टिस्ट मात्र चार घंटे के लिए कितना पैसा लेता है। मात्र चार घंटे के लिए शादी का जोड़ा कितना महंगा बेचा जाता है। चंद देर के लिए लाखों रूपये खाने-पीने में खर्च कर दिए जाते हैं जिसका कोई हिसाब नहीं होता। लेकिन हम फोटोग्राफर उन चंद लम्हों को पूरी जिंदगी

Fig. 3

Fig. 4

Fig. 5

Fig. 6

Fig. 7

Fig. 8

Fig. 9

STUDIO NEWS
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 6 अगस्त 2020 से 5 सितम्बर 2020

मुझे पूरी तस्वीर से नहीं बल्कि उस तस्वीर में छुपा एक छोटा सा लम्हा ज्यादा प्रभावित करता है। - हेनरी कार्टियर ब्रेस्सों

Fig. 10

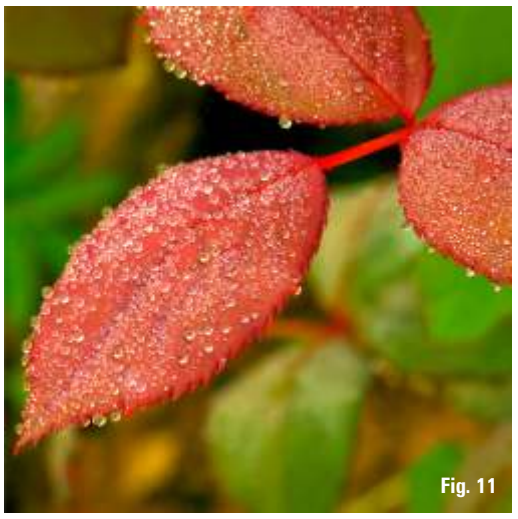
Fig. 11

Fig. 12

Fig. 13

Fig. 14

Fig. 15

Fig. 16

यादगार बनाने के लिए मेहनत करते हैं, तो उचित पैसा मांगने पर हिचकिचाहट क्यों? क्यों आप आपस में होड़ लगाने के चक्कर में रहते हैं? इससे नुकसान तो हमारा ही होता है न। हमारे पास पूरे परिवार की जिम्मेदारी है इस कोरोना काल में। अब खुद को समझाने का वक्त आ गया है। जागो फोटोग्राफरों जागो। अपना स्वाभिमान संभालो। समाज में अच्छी प्रतिष्ठा स्थापित करो।

पहले आप एक विवाह कार्यक्रम में फोटोग्राफी के लिए जितना भी दाम लेते थे अब उसका कम से कम पांच गुने की मांग करो। यदि ग्राहक तैयार नहीं तो काम छोड़ दो। यदि एकजुट होकर हम ये फैसला लेंगे तो ग्राहक कहीं नहीं जाएंगे और हमें उचित मेहनताना देंगे। मेरा विश्वास है कि आप लोग मेरा कहा मानेंगे।

झारखंड फोटोग्राफ एसोसिएशन के पूर्व सचिव, श्री संजय बोस से भी मैंने बात की। संजय जी नामी वेडिंग फोटोग्राफर व झारखंड में डॉक्यूमेंट्री मेकर भी। इस विषय पर उन्होंने अपने विचार रखे। पढ़िए:

कोरोना संक्रमण ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया है। इससे सबसे ज्यादा असर पड़ा है रोज़गार के स्रोतों पर। फोटोग्राफी, खास तौर पर वेडिंग फोटोग्राफी इनमें से ज्यादा प्रभावित पेशों में से एक है। जहाँ वर्तमान समय में लोगों के कम से कम आपसी मेल जोल और आवागमन की वकालत की जा रही है, वहीं फोटोग्राफी इन्हीं दोनों बातों पर काफी ज्यादा निर्भरशील है। फोटोग्राफरों को लोकेशन पर आपको जाना ही होगा और लोगों से न सिर्फ मिलना होगा बल्कि बिना मास्क उनकी फोटोग्राफी भी करनी होगी।

20 मार्च से लागू लॉकडाउन के बाद शादियां कैंसिल हो गईं, हो भी रही हैं तो बिलकुल सादी। इससे जाहिर तौर पर फोटोग्राफी के काम और बजट पर काफी फर्क पड़ा है, कटौती की जाने लगी है। कई फोटोग्राफर सीजन की शुरूआत में नए कैमरे व अन्य उपकरणों पर भारी उम्मीद के साथ निवेश करते हैं, लोन भी लेते है। पर इस बार उम्मीदें तो टूटी ही साथ उनके अपनी रोज़मर्रा के खर्चों पर भी दिक्कत हो गई। हालत ये है कि बड़ी से बड़ी टीम वाले फोटोग्राफर हों या फ्रीलान्सर्स सभी के लिए अपने प्रतिष्ठान को ज़िंदा रखना और इसे बेहतर भविष्य के लिए तैयार रखना एक चुनौती है। आर्थिक रूप से सक्षम फोटोग्राफर्स कुछ हद तक इस चुनौती का बेहतर ढंग से सामना कर रहे हैं, जबकि बहुत ही कम बजट में काम करने वाले फोटोग्राफर्स के लिए जीवनयापन दूभर हो गया है।

चुनौतियां जितनी बड़ी होती हैं, संभावनाएं भी उतनी ही अपार होती हैं। वर्तमान परिस्थिति से सीख लेकर आगे बढ़ने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है।

1. किसी असाइनमेंट के बजट का निर्धारण बहुत सोच समझ के साथ किया जाना चाहिए। प्रतिस्पर्धा के डर से अपने काम का मूल्य कम रखना अपने भविष्य को नुकसान में धकेलने के बराबर है।
2. कई फ़ोटोग्राफ़रों की समस्या है कि अभी किए हुए कामों के रकम की वसूली नहीं हो पा रही है। इस समस्या में आगे न पड़ें इसलिए अग्रीमेंट पेपर और एडवांस पेमेंट लेने के नियम का कड़ाई से पालन होना चाहिए।
3. कई फोटोग्राफरों से यह शिकायत मिल रही है कि शादियों में सुरक्षा मानकों का पालन नहीं होता, जिससे फोटोग्राफरों को भी संक्रमण का भय रहता है। अपनी सुरक्षा के सारे इंतजामों के साथ-साथ नए काम का असाइनमेंट लेते समय ही यह हमें खुद से भी सुनिश्चित करना है कि क्लाइंट के पक्ष से सुरक्षा नियमों का पालन किया जा रहा हो, अन्यथा खुद को और अपनी टीम को खतरे में डालना अनुचित है।
4. ये समय अपने पब्लिक रिलेशन को मजबूत करने का भी है। पुराने क्लाइंट्स के साथ संबध पुनर्स्थापित कर उनके पुरानी तस्वीरों को भी नये रूप में प्रेजेंट किया जा सकता है, इससे भी अपने व्यापार को लाभ प्राप्त करा सकते हैं।
5. वेडिंग फोटोग्राफी में यदि कमी आई है तो ऑनलाइन मार्केटिंग और विज्ञापनों में भारी उछाल आ रहा है, ऐसे में फोटोग्राफर के लिए विज्ञापन और प्रोडक्ट फोटोग्राफी की संभावनाएं बढ़ रही हैं, इन पर नजर रखने की ज़रूरत है।
6. सकारात्मक रवैये से अनेक संभावनाओं को खोजा व पहुंचा जा सकता है। निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। भविष्य पुनः उज्जवल होगा।

मात्र 10 फीसद फोटोग्राफर्स ने कार्यशालाओं को अपनी सेवाओं में जोड़ना उचित समझा है। कोविड 19 लॉकडाउन के कारण करीब 50 से 60 फीसद फोटोग्राफर्स ने जीवन यापन के लिए कोई दूसरी नौकरी करना ठीक समझा है। फिर चाहे वह कम समय के लिए, यानी कि पार्ट टाइम ही हो। हालांकि इस लॉकडान ने यह तो बता ही दिया है कि संभावनाएं खोजने से ही मिलती हैं। फोटोग्राफी को अपग्रेड करने का यह सही समय है।

यूट्यूब पर फोटो ट्यूटोरियल देखें व प्रैक्टिस करें। जानकारी बढ़ाने के लिए प्रोफेशनल फोटोग्राफर्स के वेबिनार में सम्मिलित हो। फोटोग्राफी की नई तकनीक को समझें व प्रयोग करें। आसपास हरियाली की फोटो क्लिक करें।

नए नज़रिए से देखें:

हमारे पास बगीचे में फूल और व पौधे हैं। फूल के अंदर छिपी हुई कलाकारी देखें। आप 1 से 9 तक चंद तस्वीरें देख सकते हैं। मैक्रो फोटोग्राफी के लिये चित्र 10 से 14 बीच के क्लिक देखें। घर के अंदर खुशनुमा गतिविधियों को कैप्चर करना (15 से 17 के बीच देखें)। पोस्ट प्रोसेसिंग के साथ प्रयोग (देखें 18 व 19)।

Fig. 17

Fig. 18

Fig. 19

सेव द डेट (SAVE THE DATE)

गणेश शर्मा
मेंटर एवं वेडिंग फोटोग्राफर

'भेज रहे हैं नेह निमंत्रण, प्रियवर तुम्हें बुलाने को, हे! मानस के राजहंस तुम भूल न जाना आने को' इस तरह के विभिन्न काव्यमय आग्रह विवाह के निमंत्रण पत्र पर कई दशकों से अंकित होते रहे हैं, बाद में बाल आग्रह **'मेले चाचू की छादी में जुलूल जुलूल आना'** जैसे वाक्य भी निमंत्रण पत्र का हिस्सा बने, विगत कई दशकों में शादी-ब्याह के अवसरों पर आयोजन की प्रक्रिया तथा भोजन के व्यवस्थापन में बहुत परिवर्तन आ गए हैं, उसी प्रकार परिचितों को निमंत्रित करने हेतु उन परंपरावादी पद्धतियों के साथ एक नई पद्धति भी प्रारम्भ हुई है, जिसे हम डिजिटल रूप में निमंत्रण भेजना भी कह सकते हैं, इस प्रकिया को हम **SAVE THE DATE** के रूप में सोशल मीडिया पर देखते हैं, एक ओर जहाँ छपे हुए निमंत्रण पत्र एक परिवार के अभिभावकों द्वारा विभिन्न परिवारों के अभिभावकों को भेजे जाते हैं वहीं SAVE THE DATE अक्सर भावी वर वधुओं द्वारा अपने मित्रो एवं रिश्तेदारों को डिजिटल स्वरूप में भेजे जाते हैं, कई बार यह विवाह तय होते ही प्रिंटेड कार्ड छपने के बहुत पूर्व ही भेजे जाते हैं, जिनमें तारीख के अतिरिक्त कार्यक्रम स्थल का भी वर्णन होता है, ताकि आगंतुक वेन्यू के स्तर के अनुरूप तैयारी भी कर सके, इस आशय से भी SAVE THE DATE उपयोगी है।

SAVE THE DATE वीडियो एवं फोटो दोनों स्वरूपों में मोबाइल स्क्रीन अथवा लैपटॉप पर विचरण करता रहता है, कभी यह SAVE THE DATE विवाह की तारीख तय होते ही यह सुदूर रहने वाले रिश्तेदारों को वैवाहिक कार्यक्रमों की तिथियों पर छुट्टी लेने एवं यात्रा हेतु टिकट बनवाने का सांकेतिक निवेदन का माध्यम बनता है, (क्योंकि अक्सर शादी का कार्ड वैवाहिक कार्यक्रमों से एकाध महीने या कुछ दिनों पूर्व पहुंचते हैं, जबकि विदेश में रहने वालों अथवा अति व्यस्त रहने वालों को अपने काम से छुट्टी लेने की व्यवस्था कई महीनो पहले ही करनी पड़ती है,) पर ज्यादातर इसे विवाह के कुछ दिनों पूर्व रिमाइंडर के रूप में वर-वधु द्वारा व्यक्तिगत रूप से भी भेजा जाता है।

मैंने जब प्री-वेडिंग शूट करना प्रारम्भ किया था, उस समय गूगल करने कर पर कपल द्वारा ज्यादातर स्लेट (चॉक से नाम एवं तारीख) हाथ में पकडे हुए फोटो ही दिखते थे या फोटोशॉप द्वारा SAVE THE DATE की छवियाँ दिखती थी, और हमारे क्लाईंट भी वैसी ही फोटो चाहते थे, शूट प्लान करने के पूर्व ज्यादातर फोटोग्राफर गूगल पर बड़े-बड़े शहरों के फोटोग्राफरों द्वारा शूट की हुई छवियों को देखकर अपना शूट प्लान प्लान करते हैं, मेरे लिए भी बड़ा ही आसान होता अगर मै भी एक-दो स्लेट और चॉक का प्रयोग करके SAVE THE DATE की फोटोशूट कर लेता, कुछ अलग करने की सोच ने मुझे कभी स्लेट और चॉक नहीं खरीदने दिया, अगर आप भी इन दो विकल्पों 1. स्लेट-चॉक, 2. फोटोशॉप द्वारा SAVE THE DATE की फोटो बनाने के अतिरिक्त कुछ नया करने की सोचते हैं तो यह लेख अवश्य आपकी मदद करेगा।

चित्र-1 जिसमें कपल हाथों में कलर स्मोक एवं SAVE THE DATE का पोस्टर लिए खड़े हैं, यह पोस्टर CMYK प्रिंट है जो की कम लागत में तैयार हो जाता है, इसके लिए आपको क्लाईंट द्वारा प्री-वेडिंग की बुकिंग के ही समय शादी की तारीख एवं उनका नाम नोट करना चाहिए ताकि शूट के पूर्व पोस्टर आपके पास उपलब्ध रहे।

चित्र-2 यह चित्र ड्रोन से शूट किया हुआ किसी ऐसी नदी का लगता है जिसका पानी नीला है परन्तु ऐसा नहीं है, यह एक ऊंचे स्थान से शूट किया गया है, SAVE THE DATE की फोटो को विशेष बनाने के लिए गुलाब की पंखुड़ियों से नाव को सजाया गया है, और गुलाब की पंखुड़ियों से प्रेम का प्रतीक हर्ट भी बनाया गया है, पानी के रंग को एडिटिंग करके नीला किया गया है।

चित्र-3 इसमें गुलाब के 150 से ज्यादा फूलो का प्रयोग SAVE THE DATE लिखने के लिए किया गया है, ऊँचाई से फोटोशूट करने के लिए चौघड़िया का प्रयोग किया गया है।

इसके अतिरिक्त आप और भी विभिन्न प्रकार के प्रयोग कर नयी छवियाँ गढ़ सकते है, यद्यपि प्री-वेडिंग ज्यादातर बहुत सुन्दर जगहों, प्रसिद्ध इमारतों, अथवा बहुत कृत्रिम शूटिंग लोकेशंस पर होते है, पर आप जहाँ रहते है अगर वहाँ उपरोक्त वातावरण नहीं उपलब्ध है तब भी आप अपनी क्रिएटिविटी के द्वारा इस रिक्तता को भर सकते हैं, मैंने जिन फोटो का उपयोग इस लेख सहित विभिन्न लेखो में किया है उस प्रकार के चित्र आप अपने शहर और आस पास भी कर सकते हैं, आप अपने शहर के होटल और अच्छे रेस्टोरेंट में भी सुन्दर प्री-वेडिंग फोटोशूट कर सकते हैं।

STUDIO NEWS
लखनऊ, बृहस्पतिवार, 6 अगस्त 2020 से 5 सितम्बर 2020

कैमरे का शटर खोलने से पहले ठीक से सोचना और देखना चाहिए क्योंकि वास्तव में दिल और दिमाग कैमरे का असली लेंस होता हैं। - यूसुफ कर्ष

DSLR कैमरा में ऑटोफोकस (AF) प्रणाली और भूमिका

कैमरों में ऑटोफोकस (AF) प्रणाली और भूमिका को बता रही हैं, भारत में फोटोग्राफी में पीएच.डी. प्राप्त करने वाली पहली महिला, लिम्का बुक और इंडिया बुक रिकॉर्ड होल्डर एवं एमिटी यूनिवर्सिटी लखनऊ में असिस्टेंट प्रोफेसर

डॉ. तूलिका साहू

एक धुंधली फोटोग्राफ, फोटोग्राफर के सारे किये कराये पर पानी फेर सकती है। इसलिए कम्पोजीशन और एक्सपोज़र के साथ साथ फोकस का ध्यान और उनकी समझ रखना एक फोटोग्राफर के लिए अति आवश्यक है। DSLR कैमरे के ऑटोफोकस (AF) सिस्टम के काम करने और उनके उपयोग के तरीके को व्यापक रूप से समझकर छवि की गुणवत्ता को बेहतर तरीके से नियंत्रित किया जा सकता है।

कैमरा तकनीकी के विकास के तकरीबन 130 सालों से अधिक के इस सफर में कैमरा फ़ोकसिंग सिस्टम में बहुत बदलाव आया है। आज, ऑटो फोकसिंग हर कैमरे का एक अनिवार्य अंग है, जिससे शौकिया फ़ोटोग्राफ़रों को फ़ोकस के बारे में चिंता किए बिना कम्पोजीशन और प्रकाश व्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करने की स्वतंत्रता मिलती है। वहीं यह अधिक गंभीर फ़ोटोग्राफ़रों को फ़ोकसिंग की विभिन्न टेक्निक्स के प्रयोग का शानदार अवसर प्रदान करता है।

अधिकांश DSLR कैमरे, फ़ोटोग्राफ़र दो प्रकार की फ़ोकसिंग की सुविधा प्रदान करते हैं, जहाँ मैनुअल फ़ोकसिंग में फ़ोटोग्राफ़र लेंस के फोकसिंग रिंग को घुमा कर विषय पर फोकस प्राप्त करता है वही ऑटोफ़ोकसिंग (AF) में कैमरा शटर रिलीज़ बटन को आधा दबाने पर स्वयं ही विषय को फोकस कर लेता है। DSLR कैमरों में प्रद्त्त AF सिस्टम आम तौर पर तेज, अधिकांश

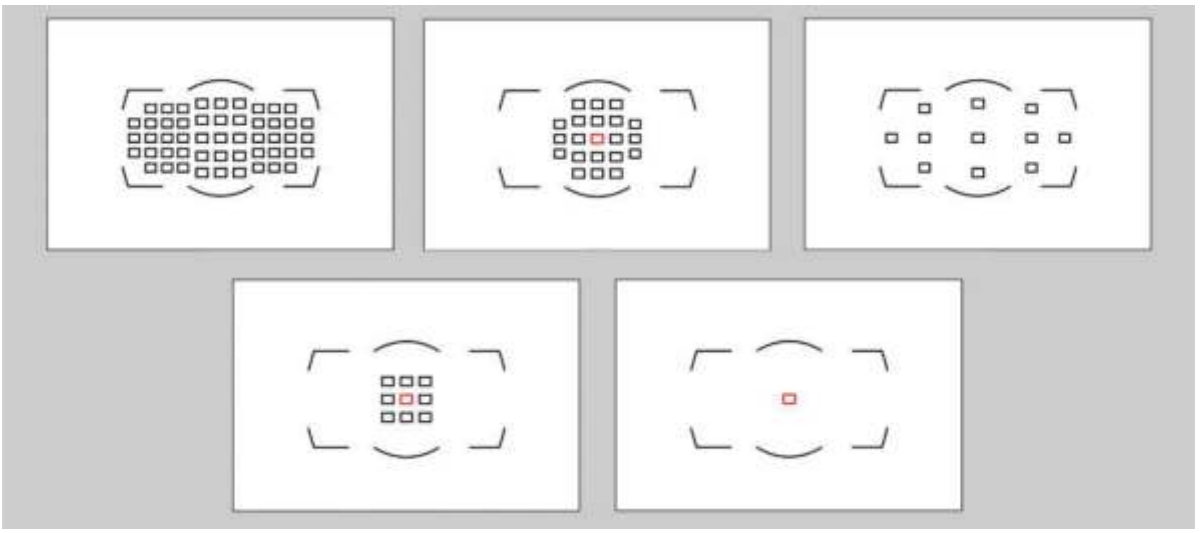

विषयों के साथ प्रभावी और उपयोग में आसान होता है।

आज बाज़ार में अलग-अलग ब्रांड्स और मॉडल्स के कैमरों में चुनाव के समय उनका ऑटोफोकस सिस्टम एक निर्णायक भूमिका अदा करता है। ऑटो फोकस सिस्टम की समझ आपको एक बेहतर DSLR का चुनाव करने में मदद दे सकता है। अब यहाँ सवाल उठता है कि अलग-अलग कैमरा कंपनियां अपने कैमरों में अलग-अलग मात्रा में फोकसिंग पॉइंट्स और सिस्टम्स की बात करते हैं, उनकी भूमिका के साथ ही उनका फोटोग्राफी में क्या महत्त्व है ये समझने के लिए हमें AF प्रणाली और AF बिंदुओं के काम करने का तरीका जानना होगा। जो निम्नवत हैं -

DSLR का फोकसिंग सिस्टम मुख्यतया 3 बिंदुओं पर आधारित होता है-

1. AF डिटेक्शन सिस्टम
2. AF बिंदुओं / पॉइंट्स सेंसर्स के प्रकार
3. AF बिंदुओं / पॉइंट्स की संख्या तथा सेंसर पर उनका स्थान

AF डिटेक्शन सिस्टम

DSLR कैमरों में दो प्रकार के AF सिस्टम आम हैं: फेज-डिटेक्शन और कंट्रास्ट डिटेक्शन

a) फेज डिटेक्शन -

इस प्रणाली में कैमरा रोशनी को विभाजित करते हुए एक ही सब्जेक्ट की दो छवियों का निर्माण करके उनकी तुलना करता है और इस प्रकार फोकस को एडजस्ट करता है। इन छवियों का निर्माण लेंस के अंदर विपरीत दिशाओं से प्रवेश करने वाले प्रकाश और उन्हें पकड़ने वाले दो ऑप्टिकल प्रिज्मों की सहायता से होता है। अधिकांश DSLR आज फेज डिटेक्शन ऑटोफोकस सिस्टम का उपयोग करते हैं। इस सेटअप में, प्रकाश लेंस और मिरर से होता हुआ ऑटोफोकस समर्पित सेंसर से टकराता है और फोकस का निर्धारण करता है।

दर्पण/मिरर की बनावट और ऑटोफोकस सेंसर बिंदुओं की संख्या पर निर्भर होने के कारण इस सिस्टम में AF पॉइंट्स की संख्या सीमित होती है। फेज डिटेक्शन के बारे में अच्छी बात यह है कि इसका उपयोग बहुत खराब रोशनी वाले वातावरण में किया जा सकता है, जहाँ कंट्रास्ट डिटेक्शन कार्य नहीं करता है। मगर साथ ही आप इसका उपयोग केवल स्थिर विषयों के लिए कर सकते हैं और यह केवल 15-20 फीट दायरे में उपस्थित विषयों के लिए ही सटीक तरीके से काम कर सकता है। इसे एक्टिव ऑटोफोकस प्रणाली भी कहते हैं।

b) कंट्रास्ट डिटेक्शन-

कंट्रास्ट डिटेक्शन आधारित AF सिस्टम कैमरा सेंसर पर अगल बगल स्थित पिक्सेल्स के बीच प्रकाश की तीव्रता के अंतर पर निर्भर होकर कार्य करता है। जब इस तीव्रता का अंतर अधिकतम तक पहुँचता है तब लेंस विषय वस्तु पर सही प्रकार से फोकस करता है। हालाँकि इसका प्रयोग DSLR में ज़्यादातर लाइव व्यू मोड के लिए किया जाता है, इसके विपरीत कंट्रास्ट-आधारित AF सिस्टम डिजीकैम और वीडियो कैमकोर्डर में आम हैं। कंट्रास्ट-डिटेक्शन, फेज-डिटेक्शन प्रणाली की तुलना में धीमे फोकस करते हैं क्योंकि फोकसिंग की प्रक्रिया में लेंस को कई बार आगे पीछे जाना पड़ता है। वहीं फेज-डिटेक्शन सिस्टम फोकस बिंदु की दूरी की गणना करता हैं और लेंस को सीधे विषय पर केंद्रित कर देता है। वे कैमरे जो दर्पण का उपयोग नहीं करते हैं (जैसे मिररलेस कैमरा, कॉम्पैक्ट कैमरा और स्मार्टफोन कैमरा) आमतौर पर कंट्रास्ट डिटेक्शन ऑटोफोकस सिस्टम का उपयोग करते हैं। इस परिदृश्य में, आपका कैमरा फोकसिंग के लिए समर्पित सेंसर के बजाय मुख्य सेंसर का उपयोग करता है। कंट्रास्ट डिटेक्शन में लगभग असीमित संख्या में AF बिंदु उपलब्ध होते हैं, जिससे यह अक्सर अधिक सटीक विकल्प बन जाता है। इसका एक और नाम पैसिव ऑटोफोकस सिस्टम भी है।

c) हाइब्रिड ऑटो फोकस सिस्टम

कभी-कभी विषय में कंट्रास्ट कम होने की दशा में ये दोनों ही सिस्टम फेल हो सकते हैं। इसकी वजह मंद प्रकाश या पिक्चर में एक ही रंग (आकाश, दीवार, आदि) की वस्तुओं का प्रभुत्त्व हो सकता है। तब फोकसिंग एक दुष्कर कार्य हो जाता है। कई कैमरों में इस तरह की समस्याओं को दूर करने के लिए AF इलुमिनेटर की सुविधा प्रदान की जाती है हालांकि यह केवल तभी अच्छी तरह से काम करता है जब विषय कैमरा लेंस के पास हो। तब जैसा कि नाम स्पष्ट है हाइब्रिड ऑटोफोकसिंग सिस्टम जो कि, कंट्रास्ट-डिटेक्शन फेज-डिटेक्शन दोनों पर आधारित होता है, का प्रयोग होता है। जो की मंद प्रकाश और एकसार बैकग्राउंड होने की दशा में भी एकदम सही और तेज़ फोकसिंग करता है

AF पॉइंट्स सेंसर्स के प्रकार

ऑटोफोकस ऐरे/जाल में दो प्रकार के सेंसर का उपयोग किया जाता है- रैखिक और क्रॉस-टाइप।

a) रैखिक (Linear) सेंसर -

रैखिक सेंसर केवल एक दिशा में प्रकाश के कंट्रास्ट को पकड़ पाते हैं, ऊर्ध्वाधर (Horizontal) या क्षैतिज (Vertical)। इसलिए जब उनका उपयोग किया जाता है, तो कभी-कभी फोकसिंग उतनी सटीक नहीं हो पाती है।

b) क्रॉस-टाइप सेंसर -

क्रॉस-टाइप सेंसर में ऊर्ध्वाधर (Horizontal) या क्षैतिज (Vertical) दोनों डिटेक्टर्स होते हैं और दोनों आयामों में प्रकाश के कंट्रास्ट को पहचान और पकड़ सकते हैं जिस कारण वे अधिक संवेदनशील और सटीक होते हैं। किसी कैमरे में जितने अधिक क्रॉस-टाइप सेंसर्स होते हैं, उसका AF सिस्टम उतना तेज़ और सटीक होता है।

AF बिंदुओं/पॉइंट्स की संख्या तथा सेंसर पर उनका स्थान

हम अक्सर देखते हैं कि कैमरा कंपनियां AF पॉइंट्स पर बहुत ज़ोर देती हैं और AF बिंदुओं की अलग-अलग संख्या एवं सेंसर पर उनका स्थान कैमरा का मूल्य निर्धारित करने में अहम् भूमिका निभाता है। इसको हम निम्न तरीके से समझते हैं।

कैमरे के AF पॉइंट्स/बिंदु पिक्चर फ्रेम के एक जाल/ऐरे के रूप में अवस्थित रहते हैं। अलग-अलग कैमरों में इन बिंदुओं की अलग-अलग संख्या और जाल के अलग-अलग पैटर्न होते हैं।

ऑटोफोकस की गुणवत्ता, सटीकता और लचीलेपन को काफी हद तक प्रत्येक कैमरेमें उपस्थित AF जाल में स्थित AF बिंदुओं की संख्या और स्थिति पर निर्भर करता है। सामान्य तौर पर, अधिक AF बिंदु अधिक परिष्कृत AF सिस्टम को प्रदर्शित करते हैं। ऑटोफोकस बिंदुओं का जाल सेंसर पर प्रकाश के कंट्रास्ट में परिवर्तन का मूल्याङ्कन अधिक सटीकता से करता है।

आमतौर पर, यह सलाह दी जाती है कि ऐसे विषय वस्तु के लिए, जहाँ पर सब्जेक्ट अस्थिर हो या कम-कॉन्ट्रस्ट वाले विषयों जहाँ पर कैमरा को फोकस करने में कठिनाई होती है, वहाँ अधिक फोकस पॉइंट्स को चुनना चाहिए या अगर विषय/सब्जेक्ट अप्रत्याशित रूप से घूम रहा हो और फ्रेम के एक बड़े क्षेत्र पर कब्जा कर रहा हो, या जब विषय फ्रेम के किनारे पर हो, तो फोटोग्राफर्स को फोकसिंग पॉइंट्स की संख्या को और बढ़ा लेना चाहिए।

उदाहरण के लिए, 9-बिंदु विकल्प की सिफारिश तब की जाती है यदि आप फ्रेम में किसी विशिष्ट विषय पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, जैसे खिलाड़ियों के समूह में एक एकल एथलीट, या एक चित्र में अपने मॉडल की आंखें।

वहीं 25-पॉइंट डायनेमिक-एरिया AF आपके फ्रेम के एक व्यापक क्षेत्र को ट्रैक करता है; उदाहरण के लिए, अगर आप एक फिगर स्केटर को शूट करना चाहें तब।

51 या 72-पॉइंट डायनेमिक-एरिया AF तब अहमियत दी जाती है अगर एक बैकग्राउंड में बिलबोर्ड या स्टैंड जैसी रेगुलर, विस्तृत पैटर्न वाली ऑब्जेक्ट्स हों।

153-पॉइंट AF सिस्टम फ्रेम के आर-पार एक विस्तृत क्षेत्र को कवर करता है, जिसमें प्रत्येक बिंदु के बीच न्यूनतम अंतर होता है तथा जिसमें सटीकता के लिए 99 क्रॉस-टाइप सेंसर शामिल हैं। यह विशेष रूप से तब भी प्रभावी होता है, जब विषय या तो अनियमित गति से घूम रहा हो या फिर फ्रेम के कोनो कि तरफ जा रहा हो।

कैमरा फोकस टेस्टिंग/परीक्षण

कभी-कभी आपका कैमरा ठीक तरह से फोकस नहीं कर पाता है, तब ये पता लगाने के लिए कि कमी कैमरे के फोकसिंग सिस्टम में तो नहीं है, निम्नलिखित तरीकों से इसका पता लगाया जा सकता है। परन्तु सबसे पहले ये सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है कि परीक्षण कि जगह पर प्रकाश ठीक हो, जिस वस्तु को फोकस किया जाना है उसका आकर कैमरे के केंद्रीय फोकस बिंदु से बड़ा तथा कैमरा पिक्चर प्लेन के बिलकुल सामानांतर हो।

1. एक मजबूत ट्रिपॉड पर कैमरा माउंट करें। कैमरा से सब्जेक्ट की दूरी लेंस की फोकल लेंथ से कम से कम 50 गुना होनी चाहिए, यानी 50 मिमी लेंस के लिए, कम से कम 2.5 मीटर।
2. कैमरा को उसके डिफ़ॉल्ट ISO (ISO 100 या ISO 200) पर सेट करें।
3. एपर्चर प्रायोरिटी (AE) का उपयोग करें और लेंस को इसके अधिकतम एपर्चर पर सेट करें।
4. कैमरा को सिंगल-शॉट ऑटोफोकस पर सेट करें।
5. केंद्रीय फोकस बिंदु का चयन करें।
6. यदि लेंस या कैमरा बॉडी में स्टेबलाइजर है, तो इसे बंद कर दें।
7. रिमोट कंट्रोल या कैमरे के सेल्फ-टाइमर के साथ शटर को ट्रिगर करें।
8. प्रत्येक एक्सपोज़र से पहले और कैमरे को लक्ष्य पर ऑटोफोकस करने से पहले लेंस को मैन्युअल रूप से अनंत (इनफिनिट) पर फोकस करें। पिक्चर के कम से कम तीन एक्सपोज़र लें।
9. 100% पिक्सेल मैग्निफिकेशन पर कंप्यूटर मॉनीटर पर फोटोग्राफ्स कि बारीकी से जांच करें।

अगर आपके रिजल्ट्स में धुंधलापन है तो टेक्निकल सहायता लें।

चाइल्ड फोटोग्राफी और इंडोर लोकेशन

अभिनीत सेठ
चाइल्ड फोटोग्राफर

हेलो दोस्तों, कैसे हैं आप सब? उम्मीद है आप सब अच्छे होंगे। इस कोरोना टाइम पे जब यूजुअलि आदमी बिजी नहीं हैं तो ये वक़्त है कुछ अच्छा पढ़ने का और समझने का। हमने पिछले अंक में ये समझने की कोशिश की थी कि अगर हमारी फोटो शूट की लोकेशन आउटडोर हो तो उसमें किन-किन बातों का सबसे ज्यादा ध्यान रक्खा जाता हैं। जिस तरह से पिछले अंक में हमने ये समझा की लाइट के हार्श या स्मूथ होने से हमारे सब्जेक्ट पर कितना फर्क पड़ता हैं ठीक उसी तरह हम इस अंक में समझने की कोशिश करेंगे कि इंडोर लोकेशन में फोटोशूट करते वक़्त किन-किन जरूरी बातों का ध्यान रखना होता है। फोटोग्राफी करते वक़्त आप कहीं भी हो, चाहे किसी मॉडल शूट या प्रोडक्ट शूट के लिए इंडोर हो या फिर लैंडस्केप या स्ट्रीट लाइफ वग़ैरा शूट करने के लिए आउटडोर हो, आपको हमेशा एक ही चीज़ मैटर करेगी, वो है "लाइट"। अब आप पूछेंगे की लाइट ही क्यों इतनी आवश्यक होती हैं? लाइट इतनी इम्पोर्टेन्ट इसलिए होती हैं क्यूंकि ये लाइट ही हैं जो ये डिसाइड करती है की सब्जेक्ट विजुअली कितना रिच दिखेगा? आपके सब्जेक्ट पे जैसी लाइट पड़ेगी आपका सब्जेक्ट वैसा ही दिखेगा। अगर लाइट हार्श है तो सब्जेक्ट बर्न दिखेगा, अगर लाइट सॉफ्ट है तो सब्जेक्ट आपको स्मूथ दिखेगा। अब जब हम कभी बच्चो का इंडोर शूट करते हैं तो ये देखना बहुत जरूरी होता है कि आप के पास बच्चे के मूवमेंट के लिए प्रॉपर स्पेस है की नहीं? अगर स्पेस ही नहीं होगा तो आप और आपका सब्जेक्ट ना ही मूव कर पाएंगे और ना ही ढंग की फोटोज आ पाएंगी। अब स्पेस कैसा होना चाहिए ये भी बहोत इम्पोर्टेंस रखता हैं। तो बात फिर वहीं आके लाइट पे अटक जाती हैं कि आपको जिस भी जगह पर शूट करना है अगर उस जगह पर लाइट प्रॉपर नहीं हैं तो आपका शूटिंग स्पेस अप्रोप्रिएट नहीं है। ज्यादातर जगह पे लाइट का मेन सोर्स विंडो ही होता हैं। अब विंडो से पड़ने वाली विंडो लाइट अलग-अलग तरह से अपना कमाल दिखाती हैं। अगर सब्जैक्ट पे लाइट साइड विंडो से पड़ेगी तो सब्जेक्ट में डिटेलिंग काफी डेप्थ के साथ दिखेगी। ऐसा इसलिए होता है क्यूंकि सब्जेक्ट पर पड़ने वाली साइड लाइट चेहरे को एक तरफ से हैवी कर देती है और दूसरी तरफ से सर्राउंडिंग की अम्बिएंस लाइट चेहरे को लाइट कर देती हैं, और ऐसे ही हैवी और लाइट का कंट्रास्ट आपके सब्जेक्ट का लुक बड़ा ही अट्रैक्टिव और इंटरेस्टिंग बना देता हैं। अब अगर लाइट पीछे से पड़े तो सब्जेक्ट बड़ा ही इल्लुमिनेटेड और वाइब्रेंट दिखता हैं। पर अगर सब्जेक्ट पर सिर्फ बैक लाइट पड़ेगी तो सब्जेक्ट बहुत ही डार्क दिखेगा। ऐसी सिचुएशन में आपको फ्रंट से भी लाइट डालनी पड़ेगी नहीं तो सब्जेक्ट की विजिबिलिटी बहुत पुअर हो सकती हैं। अगर बैकलाइट और फ्रन्टलाइट दोनों मिल जाए तो भाई वाह क्या कहने, फोटो का तो अलग ही लुक आ जाएगा। विंडो लाइट अगर बैक में है तो जरूरी नहीं कि फ्रंट लाइट भी आपको विंडो लाइट ही मिले। ऐसी सिचुएशन में आपको फ्रंट लाइट डालने के लिए आर्टिफिशियल लाइट का यूज़ करना पड़ेगा। आर्टिफिशियल लाइट में आप फ़्लैश और पोर्टा लाइट्स का यूज़ कर सकते हैं। वैसे अगर आपको शूट के टाइम पर फ्लेक्सिबिलिटी चाहिए तो फ़्लैश लाइट से अच्छा कोई ऑप्शन नहीं होता। आप फ़्लैश लाइट के यूज़ से अम्बिएंस और फ्रंट दोनों को फिल कर सकते हैं। एक तो फ़्लैश हल्की होती है और आपके कैमरे में फिट भी हो जाती हैं तो आपको मूवमेंट में भी आसान हो जाता है। आप जहाँ-जहाँ जाएंगे आपकी लाइट वहाँ-वहाँ आपके साथ जाएगी। और जैसे ही आपने अपने कैमरे का क्लिक बटन दबाया वैसे ही आपके कैमरे में लगी हुई फ़्लैश फायर हो जाती हैं और आपको एम्बिएंस या फिल लाइट मिल जाती है। फ़्लैश लाइट को आप अपनी जरूरत के हिसाब से कण्ट्रोल भी कर सकते हैं। मसलन जरूरत कम हो तो कम कर सकते हैं या ज़रूरत हो तो बढ़ा भी सकते हैं।

फ़्लैश लाइट भी मैन्युअल और टी.टी.एल. दो तरह की आती हैं। मैन्युअल लाइट में आपको सबकुछ अपने हिसाब से मैनुअली सेट करना पड़ता है। वही टी.टी.एल. में आप सबकुछ फ़्लैश पे छोड़ सकते है। टी.टी.एल. फ़्लैश का मतलब ही होता है "थ्रू डी लेंस"। टी.टी.एल. फ़्लैश अपने आप ही जज करता हैं कि उसको कितनी लाइट फायर करनी हैं। जब आप टी.टी.एल. फ़्लैश को फायर करते हैं तो वो अपने आप ही कैमरे के एक्सपोज़र को जज करके उतनी ही फ़्लैश फायर करता है जितनी सब्जेक्ट के लिए जरूरी होता है। वैसे टीटीएल फ़्लैशलाइट का इस्तेमाल ज्यादा अच्छा होता हैं-ऐसा मैंने अपने अनुभव से पाया हैं। बहुत साल तक सस्ते मैन्युअल फ्लैशेस पर रिसर्च करने के बाद जब मैंने टीटीएल फ़्लैश यूज़ करना शुरू किया तो मुझे दोनों के रिजल्ट में काफी डिफरेंस समझ आया। आपको टीटीएल के रिसल्ट में हमेशा बैटर क्वालिटी और वार्म लाइट मिलेगी इन कम्पैरिजन टू मैन्युअल फ्लैशेस में।

अब थोड़ा सा जिक्र हो जाए सॉफ्टबॉक्सेस का। फ़्लैश की लाइट अगर डायरेक्ट सब्जेक्ट पर यूज़ करनी हो तो आपको एक बार सॉफ्टबॉक्स को जरूर ट्राई करना चाहिए। सॉफ्टबॉक्स का यूज़ लाइट को काफी सॉफ्ट कर देता हैं और सब्जेक्ट की स्किन टोन को बड़ा स्मूथ शो करता हैं जिससे पोर्ट्रेट काफी अट्रैक्टिव लगने लगता हैं। इंडोर शूट में सॉफ्टबॉक्सेस का यूज़ सबसे ज्यादा होता हैं। अगर विंडो लाइट के साथ सॉफ्टबॉक्स का कॉम्बिनेशन मिल जाए तो पोर्ट्रेट में अलग ही फील आ जाता है। दोस्तों इस अंक में इतना ही, मिलते है नेक्स्ट मंथ नए आर्टिकल और ज्यादा नॉलेज के साथ, गुड बाय, टेक केयर, कीप लर्निंग कीप शेयरिंग।

RNI No. : UPHIN/2017/74695, **स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक** - सुरेंदर सिंह बिष्ट, शॉप नं. 3, शान्ति मार्केट, लक्ष्मणपुरी गेट, फैजाबाद रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ - 226016 द्वारा ज्ञान प्रिंटर्स, 207, 208 लेखराज मार्केट-2, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 से प्रकाशित।
सम्पादक - सुरेंदर सिंह बिष्ट, फोन - 0522-4108575, ई-मेलः infostudionewsup@gmail.com, वेबसाइट : www.studionews.co.in